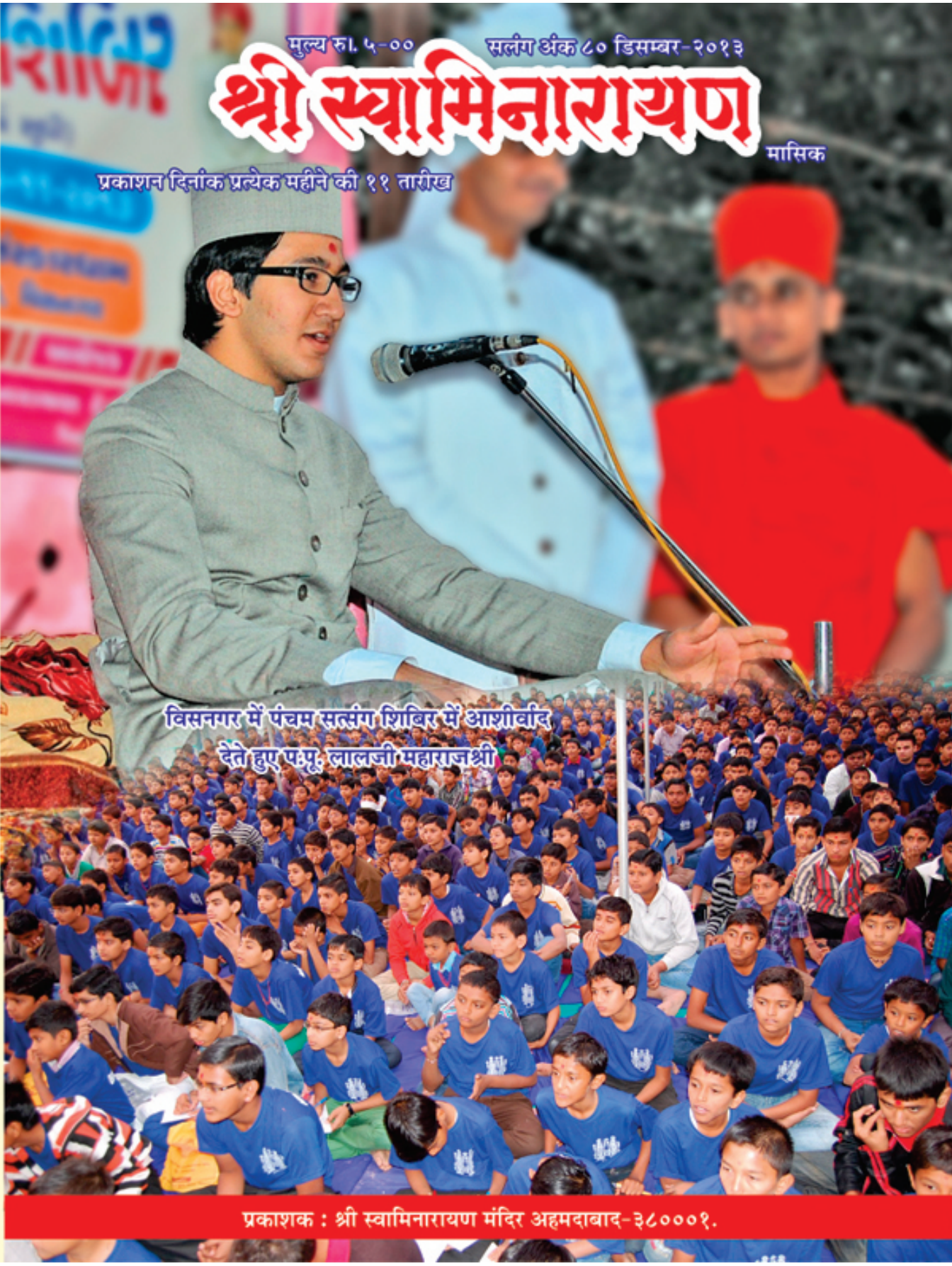
मुल्य रु. ५-००
सलंग अंक ८० डिसम्बर-२०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख



विसनगर में पंचम सत्संग शिबिर में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.



विसनगर में प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में आयोजित पंचम सत्संग शिबिर की एक झलक



श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ७ ● अंक : ८०
डिसम्बर-२०१३



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्रीहरि की पूजा के शालिग्राम	६
०४.	पंचम बाल सत्संग शिबिर, विसनगर	८
०५.	श्रीहरि द्वारा प्रदर्शित ब्रह्मकर्म तथा ब्राह्मणत्व	११
०६.	सेवा	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	सत्संग बालवाटिका	२०
०९.	भक्ति सुधा	२२
१०.	सत्संग समाचार	२६

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

विक्रम संवत २०७० के प्रारंभ में ही धीरे-धीरे ठन्ढी का आगमन हो गया है। यह ऋतु प्रत्येक व्यक्ति के लिये सुखकारक मानी जाती है। इससे शारीरिक श्रम करने में भी कोई तकलीफ नहीं पड़ती है। यह ठन्ढी की ऋतु है।

अपने भावी पीढी में उत्तम संस्कार आवे, कोई व्यसन न हो, अभ्यास में भी तेजस्विता आवे, शरीर का स्वास्थ्य सुदृढ रहे लेकिन इसके साथ संप्रदाय का मूल से ज्ञान प्राप्त हो यह भी जरुरी है। इसी उद्देश्य से अपने भावी आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री देश विदेशमें बालकों के शिबिर का आयोजन करके भावी पीढी को मजबूत कर रहे हैं। वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री लालजी के रुप में खूब प्रवृति करके गाँव-गाँव, देश-विदेश में आई.एस.एस.ओ. चेप्टरो में श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ स्थापित करके नव युवानो को सत्संग की प्रवृत्ति में प्रवृत किया है। जो आज भी हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। अपने प्रत्येक उत्सव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सभी प्रकार की सेवा अग्रेसर होता है। इसका हमें गौरव है। अभी विसनगर में प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में तीन दिन का शिबिर रखा गया है। जिस में दंढाव्य देश के १५०० जितने बालक तथा युवान भाग लिये थे। इस तरह प्रत्येक विस्तारो में शिबिरों का आयोजन होता रहेगा।

धनुर्मास का प्रारंभ १६ दिसम्बर से होगा। प्रत्येक हरिभक्त अपने विस्तार के मंदिरो में धुन का अवश्य लाभ लें। अमदावाद में रहने वाले भक्तजन परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा धर्मकुल की उपस्थिति में धुन का लाभ लेने अवश्य पधारें। यजमान परिवारश्री धुन का लाभ लेंगे।

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव समग्र धर्मकुल की उपस्थिति में आगामी दिसम्बर-२०१४ - २४ से २८ दिसम्बर तक धूमधाम से मनाया जायेगा। जिसकी विस्तारपूर्वक विज्ञप्ति दी जायेगी।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (नवम्बर-२०१३)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर तथा कांरिया श्री हनुमानजी का पूजन-आरती अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।
३ श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में समूह शारदा पूजन अपने वरद् हाथों से विधिवत संपन्न किये।
४ नूतन-वर्ष परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती तथा अन्नकूट आरती अपने वरद् हाथों से उतारने पधारे।
९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग में पदार्पण।
१० श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल कथा प्रसंग में पदार्पण।
११ श्री स्वामिनारायण मंदिर विसतपुरा मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा कथा प्रसंग पर पदार्पण।
१३ प.भ. कांतिभाई नारणदास पटेल (राम) के यहाँ पदार्पण, थलतेज
१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठा मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर सिध्धपुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१७ कालीगाँव कथा प्रसंगपर पदार्पण।
सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा तुलसी विवाह पर्सग पर पदार्पण।
१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जोडीया (मूलीदेश हालार प्रदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
२० से ३० नवम्बर तक धर्मयात्रा हेतु पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (नवम्बर-२०१३)

४ अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर नूतन वर्ष के निमित्त अन्नकूट आरती उतारने पधारे ?
१५ से १७ विसनगर बाल सत्संग शिबिर अपनी अध्यक्षता में संपन्न किये।
२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।



श्रीहरि की पूजा के शालिग्राम

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने आत्यन्तिक कल्याण की परम्परा को अखंडरखने के लिये तीन गूढ संकल्प किये । (१) शास्त्र (२) देव (३) भागवती दीक्षा तथा मूर्ति प्रतिष्ठा के लिये आचार्य पद की स्थापना किये । जिस में आचार्य पद पर धर्मकुल वंश में से लेने की बात की । परिणाम स्वरुप संवत १८८२ कार्ति कशुक्ल एकादशी को वडताल में तथा अहमदाबाद में दो देश विभाग का लेख तैयार करवाये और उत्तर देश विभाग अमदावाद में श्री नरनारायणदेव गादी के ऊपर धर्म देव के बड़े पुत्र अयोध्याप्रसादजी महाराज को प्रतिष्ठित किये तथा दक्षिण विभाग वडताल में श्री लक्ष्मीनारायणदेव गादी पर छोटे पुत्र रघुवीरजी महाराज को प्रतिष्ठित किये, इस प्रतिष्ठा के साथ उनमें सभी अपने ऐश्वर्य की प्रतिष्ठापित किये ।

उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेव तथा दक्षिण विभाग वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश को भारत के साथ सम्पूर्ण पृथ्वी के नक्शो को कर्कवृत रेखा के आदार पर उत्तर दक्षिण विभाग किया । सर्वावतारी श्रीहरि का विचरण काल सविशेष दक्षिण विभाग में ही रहा । दक्षिण विभाग में जलाशय के साधन, गाँव-शहर प्राकृतिक सम्पदाभी दक्षिण विभाग में था । विस्तार तथा हरिभक्तों की संख्या की तुलना में उत्तर विभाग में सत्तर प्रतिशत कम था । मात्र तीस प्रतिशत का क्षेत्रफल तथा अन्य व्यवस्थाये उत्तर विभाग को मिली । सर्वावतारी श्रीहरिने पक्षपात किया हो, ऐसी शंका तो कर नही सकते । इसलिये कि स्वयं स्वतंत्र सर्वकर्ता अन्तर्यामी परब्रह्म परमात्मा हैं । फिर भी भौतिक दृष्टि से मायिक भाव से दृष्टि करने पर पक्षपात जैसी प्रतीति होती है । ऐसा लोक में देखा जाता है । कि बड़े की अपेक्षा लोग छोटे के प्रति पक्षपात अवश्य करते हैं ।

दक्षिण विभाग के आचार्य पद पर प.पू.ध.धु. रघुवीर महाराज को पक्षपात होने का कोई अवकाश नहीं था । परंतु उत्तर विभाग के आचार्य पद पर विराजमान प.पू.ध.धु. अयोध्याप्रसादजी महाराज के पक्ष में आध्यात्मिक दृष्टि से नही अपितु भौतिक दृष्टि से श्रीहरि से प्रार्थना का अवसर तो था ही ।

अपने मन की बात कहें तो किससे कहें इसके लिये महाराज के सिवाय किससे कहें । गादी पद पर आरुढ होने के बाद चार वर्ष तक सत्संग में रहे । अनेक बार महाराज को यह वात कहने का विचार आता लेकिन महाराज की जैसी आज्ञा उसी में रहना, यह भाव आनेपर कभी कहे नही ।

स्वधाम गमन से थोड़े समय पूर्व एकवार श्रीहरि अहमदाबाद पधारे थे । धर्मकुल सुवासिनी भाभी के निवास स्थान पर महाराज भोजन के लिये पधारे थे . उस समय महाराज ने अयोध्याप्रसादजी के मुख मंडल की उदासीनता देखकर कारण पूछे, क्या कोई असंतोष है । यह सुनकर अयोध्याप्रसादजी महाराज हाथ जोड़ कर कहे कि बापू ! हमें असंतोष नही, लेकिन श्री नरनारायणदेव तपस्वी है, हमारा देश सूखा प्रदेश है, धनवान शहर नही है, भक्तों की संख्या भी कम है । अर्थात् श्री नरनारायणदेव को नित्य थाल (भोग) की व्यवस्था भी करनी होगी, इसके साथ संतो को भोजन की व्यवस्था भी नही हो पायेगी । गाँव कम उसमें भा आर्थिक दृष्टि से सामान्य हरिभक्त है ।

प्रभु ! आप ऐसा दया करें कि उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेव के विस्तार में आध्यात्मिक तथा भौतिक संपत्ति अखंड रहे ।

अयोध्याप्रसादजी के आर्तनाद को जानकर महाराजने अपने अंतर की प्रसन्नता प्रदान करने के भाव

से थोड़े समयतक विचार करके अपनी पूजा मंगवाये, जिस में शालिग्राम भगवान थे, जो शालिग्राम भगवान उन्हे पिताश्री धर्मदेव से प्राप्त हुये थे। पिताजी धर्मदेव के अक्षरधाम जाने के बाद महाराज उनकी पूजा करते। शालिग्राम भगवान परंपरा से प्राप्त थे। उनकी षोडशोपचार पूजा करते। जब वनविचरण में पधारे तो शालिग्राम को साथ में लेकर गये। वन प्रस्थान के समय असुर के कारण जब सरयू में प्रवेश किये तो शालिग्राम लेकर १२ गाँव तक डूबकर आगे निकले। भूतपुरी जाते समय अति विकट वन में तीन दिन तक अन्नजल न मिलने पर तीन कमंडलुजल का पान किये थे।

श्रीजी महाराज सत्संग में आने के बाद गादी पर आरुढ होने के बाद भी शालिग्राम भगवान की नित्य पूजा करते थे। उस स्वरुप की ३२ वर्ष तक सेवा किये थे। वही स्वरुप शालिग्राम भगवान का अयोध्याप्रसादजी महाराज को दिये। विशेष रुप से उन्हे आशीर्वाद देते हुए कहे कि यह उत्तर विभाग भले ही भौतिक दृष्टि से साधारण है लेकिन मैं अपनी पूजा के शालिग्राम भगवान को तुम्हे देता है और सदा तुम्हारे साथ रहने का वचन भी देता हूँ।

अलभ्य प्राप्ति से अयोध्याप्रसादजी महाराज की उदासीनता सदा के लिये चली गयी। खूब प्रसन्न हो गये। श्रीहरि को दंडवत प्रणाम करके कहने लगे हे प्रभु ! आप हमें सबकुछ देदिये। कहीं कोई कमी अब नही रही। अब हमारी सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण होगयी। आप की पूजा के स्वरुप में यह पूजा करके हमारी आनेवालीं अखंड पीढी तक सत्संग की सेवा करुंगा।

उसी समय से प्रसादी के अति चमत्कारी जिसकी कोई उपमा नहीं है ऐसी उत्तम निधिऐसे शालिग्राम भगवान आचार्य परंपरा में गादीपति स्वयं पूजा करते हैं। देश विदेश जहाँ भी जाते हैं वहाँ भगवान शालिग्राम को साथ में रखते हैं। इन प्रभु को विना जल अर्पण किये स्वयं जलभी नहीं लेते।

पूजा के डिब्बे में श्रीहरि के द्वार पूजित शालिग्राम, रामप्रतापजी पूजित शालिग्राम, अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वारा पूजित शालिग्राम इस तरह तीन स्वरुपों की प.पू. आचार्य महाराजश्री पूजा करते है।

दर्शन मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। अभिषेक का जल जिन्हे दिया जाता है उनकी आधिव्याधिनष्ट हो जाती है। कितने हरिभक्त इस प्रसादी के जल का लाभ लिये है। आचार्य महाराजश्री के निवा स्थान पर कोई- न कोई प्रसादी का जल लेने के लिये प्रतिदिन आते रहते है। जब बाहर रहते हैं तब कितने प्रसादी के जल प्राप्ति हेतु प्रतिक्षा करते रहते हैं। भाग्यशाली को ही दर्शन का लाभ मिलता है। अनंत कोटी ब्रह्मांड भगवान स्वामिनारायण की पूजा करे तो स्वामिनारायण भगवान ने जिस स्वरुप की पूजा किये हो उस अलौकिक स्वरुप की क्या बात करनी।

अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री रंगमहल घनश्याम महाराज के पुजारी के रुप में स.गु. स्वामी भक्तिप्काशदासजी गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की नियुक्ति की गयी है। (अमदावाद महंतश्री)

न्यु दिली श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स.गु. स्वामी अनिरुद्धदासजी गुरु स.गु. कोठारी स्वामी कृष्णसेवादासजी (मूली) की नियुक्ति की गयी है।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यों को सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि, यदि आपको अंक न मिलता हो तो, निवास स्थान का पता बदल गया हो, उसमें सुधारा करने के लिए कोई भी काम हो तो श्री स्वामिनारायण मासिक ओफिस में प्रातः १०-०० से ५-०० बजे तक ०७९-२२१३२१७० फोन नंबर ऊपर संपर्क करवा विन्ती है। विना ग्राहक नंबर के पता नही बदला जायेगा। इसकी सभी जानकारी करले।

पंचम बाल सत्संग शिबिर, विसनगर

(आयोजक : श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, विसनगर- निकुंज भावसार)

सूर्यनारायण अपनी प्रथम किरण धरती पर विखेर रहे थे शीतल पवन मंद गति से वह रहा था । पक्षियों का प्रातः कलरव का वातावरण था । मानव भी अपने कार्य में रत हो रहे थे । उसी समय मोबाईल की घन्टी बजी उसमें से आवाज आई कि मैं स्वामिनरायण मंदिर कालूपुर से बोल रहा हूँ । समग्र स्वामिनारायण संप्रदाय के श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के उत्तराधिकारी प.पू. भावि आचार्य श्री आप से वात करना चाहते है । अनंत जन्मो का जिसका पुण्य उदित हो उसी को यह लाभ संभव है । जो भव-ब्रह्मादिक देवताओं को भी संभव नहीं है वह आज एकाएक प्रातः सुनकर शरीर में रोमांच हो उठा । वह मधुर आवाज सुनकर दिव्यताका अनुभव हो रहा था, उन्होंने कहा कि पंचम बाल सत्संग शिबिर का आयोजन विसनगर में करने का विचार है । यह शब्द सुनते ही ''व्हालो अढडक ढळ्या'' आज्ञा को शिरोधार्य कर लिया । जिस विसनगर में महाराज सात-सात बार पदार्पण किये हो, उसी तरह प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. महाराजश्री, अनेकों बार पधारकर सत्संगियो को धन्य किये हैं । उसी आनंद को देने के लिये प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री भी अनुगामी हो रहे है । १० मिनिट के बाद पुनः फोन आया कि शिबिर की तो १५, १६, १७ नवम्बर २०१३ है । आयोजन हो पायेगा क्या ? अरे ! जहाँ स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायण का संकल्प हो, धर्मकुल का आशीर्वाद हो, उसमें आनंद क्यो न हों ?

जीवन में बड़ा उत्सव हो तो उसे ही आनंद कहेंगे । लेकिन उस उत्सव से जीवन में परिवर्तन होना चाहिए । श्री नरनारायण देव युवक मंडल, विसनगर तथा सहजानंद किशोर मंडल की एक मिटिंग प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में संपन्न हुई थी । उसी रात्रि में सभी एकत्रित होकर संकल्प के साथ प्रचार प्रसार में लग गये । दो दिन में ही (२६-२७) अक्टूबर को १५५ गाँवों का संपर्क करके सभी को शिबिर का हार्द समझाकर धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त किये थे । इस कार्य के लिये सभी टीम के कार्य कर्ता स्वखर्च से सभी का संपर्क किये । गाँव गाँव में बेनर लगाये गये । ता. ५-११-१३ से बालकों का समुदाय दिखाई देने लगा । सर्वप्रथम लाडोला गाँव में ४५ शिबिरार्थियों की सूचना मिली । ता. १०-११-१३ तक १००० शिबिरार्थियों का संधतैयार हो गया । प्रारंभ के समय ६५ गाँव की संख्या १२०० से भी अधिक हो गया ।

ता. १५-११-२०१३ शुक्रवार (प्रथम दिन)

दिव्य आनंद का दिन आया । सभी बाल शिबिरार्थी आनंद में डूबे हुए थे । सभी सहजानंद संस्कार धाम विसनगर से प्रस्थान किये । विस्तार के अनुसार टीम की व्यवस्था की गयी थी । जिस गाँव की टीम हो उसका रजिस्ट्रेशन होता था । आने वाले सभी १२ से २० वर्ष के शिबिरार्थीको टूल, ब्रश, साबुन, टी शर्ट इत्यादि दिया जाता था । रहने खाने की व्यवस्था भी थी । सभी के संप्रदाय के नियमानुसार भोजन की व्यवस्था दी गयी थी । सुबह अल्पाहार, दोपहर में भोजन, साम को अल्पाहार, भोजन इत्यादि की व्यवस्था की गयी थी । प्रातः ९-०० बजे प.पू. लालजी महाराश्री पधारे । साथ में संत भी पधारे हुए थे । स्वागत में श्री नरनारायणदेव, श्री स्वामिनारायण भगवान के जयघोष से सारावातावरण गूंज उठा था । सभी के स्वस्थान पर बैठ जाने के बाद मंगलाचरण प्रारंभ हुआ ।

दिव्य पंचम बाल सत्संग का प्रारंभ प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संत-भक्तों द्वारा मंगल दीप प्रागट्य के साथ किया गया । नंद-संतो द्वारा रचित गीत कीर्तन इत्यादि का प्रोग्राम किया गया था ।

२. शा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) स्वरुप निष्ठा के ऊपर शिबिरार्थियों को उत्तम शिक्षा प्रदान किये । प्रथम सत्र के अन्त में शिबिरार्थी भोजन करके अपने निवास स्थान पर गये । करीब २-३० बजे द्वितीय सत्र प्रारंभ हुआ ।

स.गु.शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदाजी (काकंरिया) द्वारा शिक्षापत्री वचनामृत विषय पर खूब उत्तम ज्ञान प्रदान किया । बाद में प्रश्नोत्तरी का कार्यकृम प्रारंभ हुआ । जिसका निराकरण प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संतो द्वारा किया गया ।

प्रथम दिन के द्वितीय सत्र के अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने आशीर्वचन में बताया कि यह शिबिर का कार्यक्रम सत्संग को दृढ करने के लिये तथा धार्मिक ज्ञान के लिये किया गया है । इससे सभी में दृढता आयेगी । सभी लोग एक दूसरे के नजदीक आसकेंगे । सभी लोग बड़े भाग्यशाली है । सत्य का ग्रहण करना ऐसा उन्होंने आशीर्वाद दिया था । रात्रि भोजन के बाद इन्टरनेशनल जादूगर का सो सभी देखने के लिये अनुशासित ढंग से बैठ गये । करीब ९-०० बजे से ११-४५ तक जादू का शो शिबिरार्थीयों ने देखा ।

ता. १६-११-२०१३ शनिवार (द्वितीय दिन)

ऐसे लगता था कि १२०० से भी अधिक बालक नित्य क्रम पूर्ण करके ८-०० बजे तक सभा में उपस्थित हो जायेगे । श्री स्वामिनारायण के सच्चे हरिभक्त तथा प.पू. लालजी महारजश्री बाल सेना समय से अनुशासित ढंग से उपस्थित हो गयी । प.भ. चिंतनभाई तथा प.भ. महेशभाई द्वारा मानसी पूजा तथा योग करवाया गया था । बाद में अल्पाहार के बाद ९-३० बजे दूसरे दिन का १ सत्र प्रारंभ हुआ था ।

बाद में सत्संगी विषय पर माणसा मंदिर के महंत स्वामी श्री घनश्यामप्रकाशदासजीने बड़े सुंदर उदाहरण के साथ प्रवचन किया था । पंचवर्तमान विषय पर प.भ. नारणभाई चौधरी (बालवा) द्वारा सुंदर उपदेश प्राप्त हुआ था । ज्ञान के साथ गणित का आनंद स.गु. छोटे पी.पी. स्वामी (इडर) द्वारा किया गया था । बाद में सभी प्रसाद लेने गये थे ।

दोपहर २-०० बजे प्रत्येक विस्तार के प्रतिनिधिबाल शिबिरार्थियों को लेकर उपस्थित हो गये । आयोजकों द्वारा दोपहर के कार्यक्रम मे महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करवाया गया था । शिबिरार्थियों को रेली तक पहुंचने के लिये बहनो ने सुंदर व्यवस्था की थी । शिबिरार्थी एक समान सेट पहने हुये थे । सर्व प्रथम महाराज के प्रसादी के स्थल सलाट में पदचिन्ह का दर्शन करके शहरी मार्ग से श्री स्वामिनारायण की धुन बोलते हुये आगे बढ रहे थे। प.पू. लालजी महाराजश्री उन सभी के बीच में चन्द्र मा की शोभा प्राप्त कर रहे थे । लालजी सुबा का घर, दुर्लभ दास का चौक उदय कुंवर का घर होते हुए मुख्य बाजार से पुरुषो के मंदिर भीमनाथ महादेव तथा अलौकिक प्रसादी भूत पिंडारिया सरोवर पहुचे थे । समग्र पद यात्रा रैली में पपू. लालजी महाराजश्री के साथ तथा संतो के साथ शिबिरार्थी दिव्य आनंद का सुख प्राप्त कर रहे थे । राजमार्ग पर प्रतिष्ठित व्यापारी एवं सत्संगी प.पू. लालजी महारजाश्री का संमान करके पूजनक रते थे । यात्रा मार्ग में जगह-जगह पर चाय-नास्ता-शरबत की व्यवस्था की गयी थी ।

पिंडारिया सरोवर में स.गु. उत्तमांद स्वामी की समाधिका दर्शन करके स.गु. महानुभावानंद स्वामी द्वारा प्रतिष्ठित श्री हनुमानजी का दर्शन करके सभा में उपस्थित हुये थे । जहाँ पर वडनगर मंदिर के महंत स्वामी नारायणवल्लभदासजी द्वारा महिमा का वर्णन किया गया था । प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद देते समय बताया कि अनुशासन, विनय, नियमितता ही जीवन को संस्कार युक्त बनाती है ।

इसके बाद बहनो द्वारा शिबिरार्थी स्थल पर वापस आये थे । रात्रि भोजन के बाद सभी रास-गर्बा का आनंद लिये थे । श्रीजी महाराज के समय पंचाला में जिस तरह

महाराज भक्तों के साथ रास किये ठीक वही अनुभूति यहाँ हो रही थी। इस में सभी अपने आप को भूल गये थे। यहाँ पर मात्र प्रेम लक्षणा भक्ति का स्वरुप प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था।

ता. १७-११-२०१३ रविवार (तीसरे दिन)

देव दीपावली को संत-हरिभक्तों द्वारा तथा प.पू. लालजी महाराजश्री द्वारा मूल संप्रदाय के रहस्य को समझाया गया था। प्रवचन के क्रम मे पू. पी.पी. स्वामी (छोटे) (ईडर) ने धर्मकुल की तथा गुरु की महिमा का गुण गान किया था। इस कार्यक्रम में डायरा का भी आयोजन किया गया था। बाद में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल विसनगर के प्रमुख श्री चिंतनभाई कंसारा ने सत्संग विषय पर प्रेरणादायी प्रवचन किया था। प्रथम दिन द्वीतीय सत्र में प.भ. उदयनभाई महाराज तथा संतो द्वारा मार्गदर्शन दिया गया था। संचालको की मिटींग में प.पू. लालजी महाराजश्रीने बताया कि हम जो भी प्रवृति करते है वह निष्काम भाव से होनी चाहिये इससे भगवान श्री स्वामिनारायण के सिद्धान का समन्वय होता रहेगा तथा महाराजकी प्रसन्नता मिलेगी।

अंतिम दिन के अंतिम सत्र में कीर्तन भक्ति के बाद प्रश्नोतरी का कार्यक्रम रखा गया था। श्री उदयन महाराजने शिबिरार्थियों को उद्‌बोधित करते हुए कहा कि स्वभाव, शंका, व्यसन से सदा दूर रहना चाहिये। बाद में प.पू. लालजी महाराजश्रीने कहा कि सभी लोग इतना अवश्य करना कि श्रीजी महाराज जिससे प्रसन्न हो वही काम करना। महाराज को प्रसन्न करने के लिये हम भी तथा सम्पूर्ण धर्मकुल एवं संत रात दिन श्रम करते रहते हैं। बालक तो संप्रदाय के मूल स्तंभ है। इस शिबिर में श्री नरनरायणदेव युवक मंडल विसनगर ने तन, मन, धन से जो सेवा की है वे धन्यवाद के पात्र हैं। थोडे समय में इतना सुंदर आयोजन देख कर सभी के मन को आगे करने की प्रेरणा मिली है। आप सभी शिबिरार्थी धन्यवाद के पात्र हैं।

इस के साथ संचालक तथा प्रतिनिधिभी धन्यवाद के पात्र है। क्योंकि सभी ने खूब निष्ठापूर्वक अपने कार्य को संपन्न किया है। आप सभी को हमारा आशीर्वाद तथा महाप्रभु श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि वे सदा आप सभी पर प्रसन्न रहें। यहाँ का युवक मंडल तन, मन, धन से सेवा करके तथा आनन्दित मन से जो यह स्वल्प समय में कार्य किये है यह एक दृष्टांत रुप है। प.भ. महेन्द्रभाई जयन्तीभाई भावसार द्वारा धवलभाई तथा संदीपभाईने लाभ लिया था। महेसाणा के अग्रगण्य हरिभक्तों की सेवा की सराहना की गयी थी। प्रत्येक हरिभक्त को सन्मान पत्र भी दिया गया था। शिबिरार्थीयों को भी प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद रुप सन्मानपत्र दिया गया था। पंचम बाल सत्संग शिबिर में ५०० से भी अधिक बालकों को पूजा पेटी, ११५ बालकों को गुरुमंत्र, ३०० से अधिक बालकों को कंठी धारण कराई गयी थी। समग्र शिबिर के प्रेरणारुप संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से सभा संचालन श्री चिंतनभाई कंसाराने किया था। तथा मार्गदर्शन का कार्य प.भ. उदयनभाई महाराजने किया था।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्रीहरि द्वारा प्रदर्शित ब्रह्मवर्म्म तथा ब्राह्मणत्व

- महादेव धोरियाणी (राजकोट)

''वेदो नारायणः साक्षात्'' ऐसा अर्थशास्त्र वेद हैं वेद तथा परमात्मा को ब्रह्म की उपमादीगयी है । यजुर्वेद में ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिये ब्राह्मणों को आज्ञा की गयी है। जो वेदों के ज्ञाता है, वेद पढा सकते हैं वेदों के अनुसार आचरण करते हैं, ब्रह्मवेता है वे ब्राह्मण ब्राह्मणत्व को प्राप्त किये हुये हैं । ऐसे ब्राह्मणों के संपर्क, सत्संग द्वारा मनुष्य में ब्रह्मतेज या परमात्मत्व प्राप्त होता है।

अपने समाज में ब्राह्मणों का स्थान आज भी उच्च स्थान पर ही है। सांसारिक विवाह विधिया मृत्यु के बाद की विधि, भूमिपूजन, लक्ष्मी पूजन, दुकान, मकान, फेक्टरी का उद्घाटन सभी कर्म ब्राह्मणों द्वारा ही संपन्न होता है । वे इन प्रसंगो में वेद की ऋचा, यज्ञ इत्यादि द्वारा कार्य परिपूर्ण करते हैं । प्रसंगानुसार भागवत पारायण, ज्ञान यज्ञ, देवी पुराण, शिव पुराण, सत्संगिजीवन पारायण, विष्णुयाग इत्यादि सत्कर्म के लिये वेदशास्त्रज्ञ ब्राह्मणों को यजमानलोग आमंत्रित करते है ऐसे समय, कथा के समय में, कथाकार, वक्ताभूदेवों को ब्रह्मचर्यादि नियमों का नियमपूर्वक पालन करना होता है। दाढी बनाना, नख केश काटना भी मना रहता है।

ब्राह्मणों में पवित्रता, सत्य बोलना, त्याग, परोपकारवृत्ति, संतोष, क्षमा, धैर्य, धर्मपालन, वैराग्य वृत्ति, इत्यादि से ब्रह्मतेज खिलता है। इन्ही कई कारणों से ब्राह्मण जन्म से पूजनीय माने जाते है । शास्त्रकारों के अनुसार ब्राह्मणों की शरीर मिलना अति दुर्लभ है । वेद संबंन्धित क्रिया का पालन करने से उन्हें द्विवेदी, त्रिवेदी चतुर्वेदी उपाधिसे अलंकृत होते है । संतोषी ब्राह्मणों का आशीर्वाद फलता है । ब्राह्मण मस्तक पर त्रिपुंड या तिलक करते है । स्कंधपर यज्ञोपवीत, शिर पर शिखा, धोती का पीतांबर, कंठ में तुलसी की या रुद्राक्ष की माला, हाथ में गौमुखी-माला, पग में खडांउ छाती पर भगवान के नाम का उपवस्त्र इत्यादि ब्राह्मणत्व की निशानी को धारण करते है । शास्त्रानुसार आचार-विचार तथा गृहस्थाश्रम के नियमों का चुस्तपना के साथ पालन करते है। ऐसे ब्राह्मणों का आशीर्वाद फलता है। ऐसे ब्राह्मण तीर्थ स्वरुप अथवा जंगम तीर्थ कहे गये है । ब्राह्मणों को दान देने की महिमा का वर्णन सभी शास्त्रों में मिलता है।

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने २१२ श्लोक की शिक्षापत्री संवत १८८२ माधशुक्ल-५ (वसंत पंचमी) को वडताल में लिखी थी। जिस में श्लोक नं. ४६, ८९, १३२, १५५, १५६, १८४, १८६, १९७ में ब्राह्मणों के धर्म का निरुपण किया गया है।

स्वयं के कुल परंपरा के अनुसार ब्राह्मणों को त्रिपुडं धारण करना, तिलक लगाना, रुद्राक्ष धारण करना, माला धारण करना, वंश परंपरा के अनुसार जो चला आ रहा हो उसे कभी नहीं छोड़ना नही चाहिये । नारायण तथा शिव में एकात्मभाव समझना चाहिये । श्रीहरि ने स्वयं अनुरोधकिया है कि दोनो देवता वेदप्रतिपादित देव कहे गये है।

ब्राह्मणों को शम, दम, क्षमा, तथा संतोष इत्यादि जो गुण बताये गये है उनसे युक्त होने के लिये अनुरोधकिया है। विद्यार्थियों के पढने के लिये विद्यालय बनवाकर उसमें विद्वान ब्राह्मण को रखकर सदविद्या का प्रवर्तन करना । धनाढ्य ऐसे गृहस्थ सत्संगी ब्राह्मणों द्वारा अहिंसकयज्ञ करावें तथा ब्राह्मणों को उचित दान दक्षिणा भेंट में दें। इस तरह का सभी को अनुरोधकिये है। ब्राह्मण कभी भी प्याज तथा लसुन न खायें।

विशेष तो शिक्षापत्री के १८७ वें श्लोक में श्री स्वामिनारायण भगवानने लिखा है कि ''जो ब्राह्मण हैं वे स्नान-संध्या, गायत्री जप श्री विष्णु भगवान की पूजा तथा वैश्व देव अर्थात् विना खिलाये खाना नहीं चाहिये । आज तो ब्राह्मण में से ब्रह्मतेज खत्म होता दिखाई देता है । शास्त्र में बताई विधिका लोप होता दिखा देता है । ब्राह्मणों का ब्राह्मणत्व, ब्रह्मतेज स्वतः क्रिया शील के अभाव में नष्ट होते जा रहा है । फिर भी समग्र भारत के तीर्थ स्थलों में कितने त्यागी समर्थ संतवर्य, ब्रह्मचारी तथा वेदांती ब्राह्मणों का दर्शन अपनी आत्मा को पावन करता है।

सेवा

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (मेमनगर-अमदावाद)

सेवा परं धर्मः । सेवा उत्तम धर्म है । **economic activity** के साथ मिली हुई सेवा को ''सर्विसीस'' कहते है। इस सेवा के बदले मेवा अर्थात् मनी अर्थात् रुपया - (वेतन, कमीशन, कन्सल्टन्सी फीस, प्रोफेसनल फीस वि.ना. स्वरुप में) प्राप्त होगी।

जब कि धर्म के निमित्त की जानेवाली सेवा में **Give Estake** पोलिसी नही होती। हाँ, इस में सकाम तथा निष्काम इस तरह दो प्रकार है। श्रीहरि ने निष्काम सेवा को सर्वश्रेष्ठ कहा है । रतनजी मियांजी के घर का धनी बताये तो मूलजी ब्रह्मचारी ने उनकी सेवा की प्रशंसा किये, उनकी सेवा के गुणों को ईश्वर जैसा बताया । क्योंकि वे निरन्तर हरिभक्तों की सेवा में महाराजकी सेवा होती है तथा महाराज उसी से प्रसन्न होते है, यह उनके मन का भाव होता है।

कोई भी धर्म हो या संप्रदाय हो यह सेवा से चलता है। पैसे से तो मात्र निश्चित कार्य ही संपन्न होता है । जो धनाढ्य हैं वे उन्मुक्त हाथ से मात्र दान करके चाहे कि सभी कार्य संपन्न हो जायेगा तो यह संभव नही है। इसके लिये सेवा भावी भक्तों की प्रसंशा की जाती है। वे उदार भाव से निस्पृह होकर सेवा में लगे रहते हैं। सभा में भी ऐसे भक्तों की स्तुति की जाती है। यह एक व्यवहार भी है। व्यवहार से पूर्ण तथा धनदान करने में पूर्ण ऐसे हरिभक्त को आगे रखने के लिये महाराजने आज्ञा की है। तन, मन, धन से सेवा की जाती है। तन से की जाने वाली सेवा उत्तम, मन से की जाने वाली सेवा मध्यम, धन से की जाने वाली सेवा अधम बताई गयी है। यह ईश्वर प्रेरित क्रम है। क्योंकि श्रीहरिने निष्काम सेवा करने वालों को प्रथम स्थान पर रखा है।

सेवा जितनी नीचे की होगी उतना ही उसका अधिक फल होगा। उका खाचर श्रीहरि का दर्शन तथा ज्ञान वार्ता को छोड कर ''कुत्ते ने जो विगाड किया उसे साफ करने'' के लिये प्रथम स्थान दिया था। बाद में स्नान करके सभा में पधारे थे। ऐसी अनुपम सेवा की महाराज ने खूब प्रशंसा किये थे । क्योंकि भगवान से भी अधिक भक्त के लिये की गयी सेवा परमात्मा को अच्छी लगती है। परमात्मा की सेवा की अपेक्षा भावना उत्तम होनी चाहिये। गंगाबाई गरीब थी, जमनाबाई ब्राह्मण थी साथ में पैसे वाली थी। फिर भी गंगाबाई की भक्ति के कारण उनका भोजन किये । जमनाबाई भोजन भेंजी तो उसे स्वीकार नहीं किये किन्तु जेतलपुर के जीवण भग मढ की रोटी प्रभु को भरी सभा में अर्पित किये तो वहीं पर पेट भरकर खाये । इस तरह इतिहास गवाही है कि दुर्योधन के घर की ५६ प्रका रकी भोज्य सामग्री छोड़कर विदुरजी के घर भाजी खाये थे। हमारा भक्त गरीब है या अमीर यह प्रभु नहीं देखते वे मात्र भावना देखते है, प्रेम, श्रद्धा देखते हैं। गृहस्थाश्रमी सत्संगी जो उद्यम करता हो उसमें से २० वां भाग या १० वां भाग प्रभु को अवश्य अर्पण करे ।(१४७ शि.प.)

श्री स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा बडी अद्‌भुत है। मंदिर मं २० वां या १० वां भाग दान करने का महाप्रभु की आज्ञा में हेतु नहीं है बल्कि अपने आश्रितों को प्राप्त जो धन राशि है उसे इस दान प्रक्रिया द्वारा शुद्ध करने की बात है।

दशवां या वीसवां भाग ठाकुरजी के नाम अर्पण हो बाद में ही अवशिष्ट भाग से अपने परिवार का पोषण तथा व्यावहारिक कार्य हो, इससे अन्तर - बाह्य की शुद्धि होगी।

भगवान स्वामिनारायण ने सेवा का और भी प्रकार समझाया है - संभावना अर्थात् सेवा द्वारा दूसरे का ख्याल रखना। शक्यता भी इसी का अर्थ है।

अपने पास जो सेवक वर्ग हो उन सभी की अपने सामर्थ्य के अनुसार संभावना - रखनी चाहिये।

भगवान के मंदिर में जो भी अन्नार्थी आवे उसकी अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्नवस्त्रादि द्वारा संभावना (सेवा) करनी चाहिये। (शि. १३१) गाय, बैल इत्यादि जो भी पाल्य पशु है उनकी संभावना (सेवा) करनी चाहिये, संभव हो तो रखना अन्यथा नहीं रखना।(शि. १४२)

हमारे जो भी आश्रित है वे माता, पिता, गुरु, तथा रोगातुर की जीवन पर्यन्त अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा करे। (शि. १३९)

सेवा करने का यह उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसे श्रीहरिने अलग-अलग रुप में निर्दिष्ट किया है।

ठाकुरजी की सेवा करने वाले ब्रह्मचारी या गाँव के मंदिरों में सेवा करने वाले गृहस्थों की सेवा भी उत्तम सेवा है। मंगला आरती से लेकर शयन आरती तक प्रभु की जितनी सेवा पुजारी करते है भोजन प्रसाद भोग इत्यादि का अर्पण जितनी श्रद्धा भावना से करते है, वह बडी कठिन होती है। जिसे हम स्पष्ट देख सकते हैं। प्रत्येक भक्त को अपना अंग देखना चाहिये। उन-उन अंगो द्वारा प्रभु की सेवा, मंदिर की सेवा करने से मन में विशेष आनंद मिलता है।

सेवा शब्द सादा, सरल, सुगम अवश्य है लेकिन इस शब्द की भावना अत्यन्त दृढ है। इस सेवा कार्य से प्रभु प्रसन्न होते हैं। संत प्रसन्न होते हैं साथ में सत्संग में आत्मीयभाव फैलता है। धर्म के लिये फूल नही तो फूल की पंखडी प्रभु के चरणों में भावना करना ही सेवा है। यही सर्वोत्तम प्रकार है।

Tejendraprasadji

અમારો અંગત અભિપ્રાય

આપણે સૌ, નિજ મંદિરમાં સંપ્રદાયની પરંપરા અને ધારાધોરણ પ્રમાણે પ્રતિષ્ઠિત મૂર્તિઓમાં સર્વાવતારી સર્વોપરિ શ્રી હરિ સ્વયં અખંડ બિરાજમાન રહે છે તેમ દ્રઢ પણે જાણીએ અને માનીએ છીએ. આ પ્રકારની મૂર્તિઓમાં શ્રી હરિ હંમેશા પ્રગટ પ્રત્યક્ષ છે.

આજની પરિસ્થિતિમાં ઘણી જગ્યાએ આપણા મંદિરોમાં ઠાકોરજીની સન્મુખ અવનવા રંગોની લાઈટો (જે સામાન્ય રીતે લગ્ન જેવા પ્રસંગોમાં કે ડાંસ પાર્ટીઓમાં શોભે) ઝબકારા મારતી જોવા મળે છે. આવી લાઈટો સામે આપણે પણ બે ઘડી ઉભા રહીએ તો અનુભવ થાય કે તેની અસર આપણી આંખો અને મન ઉપર કેવી થાય છે.

ઠાકોરજીની મૂર્તિના દર્શન કરતાંજ મનમાં દિવ્ય શાંતિનો અનુભવ દરેક ઈચ્છે. ઠાકોરજી આગળ ફક્ત મૂર્તિના દર્શન (નબળી આંખોવાળાને પણ) સારી રીતે થાય તેવી જ સૌમ્ય રોશની હોવી જોઈએ.

મૂર્તિ આગળ વધુ પાવર વાળી લાઈટો વાતાવરણમાં પણ ગરમીનું પ્રમાણ વધારે છે. જે મૂર્તિમાં બિરાજમાન શ્રી હરિને પણ ક્યારેય ન રૂચે.

વૈષ્ણવ સેવા રીતિ પ્રમાણે આપણે ઠાકોરજીને લાડ લડાવીએ છીએ પણ કાગળના કે પ્લાસ્ટીકના ફૂલો, કલગીઓ, તોરણ વગેરે પણ અમારી દ્રષ્ટિએ મશકરીરૂપ છે. જો શક્ય હોય તો સાચા ફૂલનો ઉપયોગ કરવો નહિતર ઠાકોરજી ફૂલ વગર પણ રાજી રહેશે.

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

Shree Swaminarayan Bagh
Memnagar, Ahmedabad - 380052 (INDIA)
Tel: 079 27478070 Cell : 98250 08448
Email : tejpande@yahoo.co.in
Shree Swaminarayan Museum (9-00 to 11-00am)
Naranpura, Ahmedabad - 380063
Tel: 079 2749 9597 Fax : 079 2741 9597

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

सम्वत् १८७९ ना वरखे सुद ३ दने आ देह श्री अमदवादा मधे श्री नरनारायणदेव नी सेवा मा ली । खाचर उनड एभल रेवाशी गाम गढडाना जत गाम सुखपर तालुके करीआणा मुलगरी ताबाना खाचर ओढा देशाना तथा लुण देशाना तथा उनड देशाना तथा राणा देशा ना तथा मोती देशाना ए अमारा घरे धरणे लखी ओल छे ते गामना खत तथा जाते लेणा रुपैया तथा धरती सांती ४ नी तथा वाडी कोश २ नी तथा भाग चोथो अजीफा नो खराजात काढतां खेतरवाडी वगेरे अजीफो एज रीते अमेंवैवट करीने खाता ते परमाणे श्री नरनारायणदेवनी सेवाना खरचमां धरमादा श्री करश नारयण आपु छे ने जीयां सुधी रुपैया लेणा होए तीआ सुधी वैवट करी उपज सरवे श्री अमदावाद लावी मंदिरना खरच मां वावरे ने जारे मूल गोमेती गाम मुकावे रुपैया आपे ते पण सदरना श्री करशनारायण छे ने अमने ए गामनुं लखत करी आपेल छे ते पण श्री नरनारायणने मंदिर आपुं छे आ लखता अमो अमारी अकलहुंशीआरी राजी रजावंत थी लखी आपुं ते शही छे

अत्र मतु खातर उनड एभल
श्री गढडावालानुं मतु ऊपर लिखु
ते सही छे।

अतर शाख
१. श्री जगदीशनी शाख
१. खाचर भूरा डोशा गाम नागडकावालानी शाख
१. खाचर सोमला गोदडना गाम बोटादवालानी शाख
१. खाचर वशता जैहता गाम कारीआणीवालानी शाख
१. चुडासमा पुजाजी बुटाजी गाम धोलेरावाळानी शाख
१. दस्तावीज कुरजी रामजी गाम गढडावालानी शाख

महामुक्त दादा खाचर नी सहीवाला तथा अग्रगण्य हरिभक्तों की साक्षी में सहीवाला यह पत्र श्रीजी महाराज के प्रसादी का है। अति कल्याणकारी इस पत्र का दर्शन सभी को हो इस हेतु से श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ९ में रखा गया है। सभी हरिभक्त इस पवित्र प्रभु के प्रसादी के पत्र का अवश्य दर्शन करे।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर























नूतन वर्ष में अपने देश-विदेश के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन

नारायघाट, एटलान्टा, ह्युस्टन, टोरन्टो, केनेडा, एडनिम्टोन-केनेडा, ओकलेन्ड, न्युझीलेन्ड, लेसर, डेट्रोईट, कलिवलेन्ड, और शिकागो मंदिर में तुलसी विवाह , माणसा, दहेगाव ।











अहमदाबाद मंदिर में नूतन वर्ष को ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री । रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज के १२७ वे पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ ब्र. राजेश्वरानंदजी स्वामी तथा अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



दिपावली प्रसंग पर कालुपुर मंदिर में भिन्न - भिन्न दर्शन















दिवाली के शुभ दिन पर श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में समूह शारदापूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ पू. महंत स्वामी तथा ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी आदि संतगण।



श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अक्टुबर-२०१३

रु. १,०६,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के अ.नि. स.गु. स्वामी त्रिकमचरणदासजी गुरु अ.नि. स्वामी नारायणप्रसाददासजी के हितवाले हरिभक्तों की तरफ से पुराणी स्वामी धर्मजीवनदासजी
रु. ५०,१००/-	प्रीतेश परमार - केनेडा
रु. २५,०००/-	प.पू. बड़े महाराजश्रीकी तरफ से कृते विनोदभाई, अमदावाद
रु. २१,०००/-	अरविंदभाई गोसलिया, अमदावाद
रु. ११,०००/-	धीरजभाई के. पटेल, अमदावाद
रु. ५,००१/-	महेन्द्रभाई नगीनदास भावसार, चांदखेडा
रु. ५,००१/-	उमेदभाई रवजीभाई राठोड कृते संदीप तथा विजयभाई
रु. ५,०००/-	पटेल नारायणभाई गोकलभाई कृते धवलभाई तथा पिनाकीनभाई - सापावाडा
रु. ५,०००/-	कमलेशभाई एच. शाह
रु. ५,०००/-	पटेल मुकुंदभाई ए. अमदाबाद
रु. ५,०००/-	घनश्याम ईन्जिनीयरींग कृते मीनाबहन - बोपल
रु. ५,०००/-	प्रकाश कालीदास - डांगरवा

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अक्टूबर-२०१३)

ता. ५-११-१३ (प्रातः डॉ. हरिकृष्णभाई गोकलभाई पटेल, सापावाडा

ता. ५-११-१३ (सायंकाल) घनश्यामभाई तथा हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल कृते चंपाबहन सेटेलाईट।

ता. ७-११-१३ मंगुबहन प्रहलादभाई पटेल कृते घनश्याम तथा अर्पित - जीवराजपार्क।

ता. ९-११-१३ कान्तिलाल चुनीलाल ठक्कर कृते धवलभाई, अमदावाद।

ता. १०-११-१३ (प्रातः) डी नरनारायणदेव महिला मंडल कृते रंजनबा तथा नानीबा - विराटनगर।

(दोपहर) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल कृते सां.यो. मंजुबा तथा भारतीबा - कालुपुर हवेली।

(सायंकाल) सेमीट्रोनिक्स परिवार कृते जगदीशबाई कृते शाह - आंबावाडी।

ता. १३-११-१३ अ.नि. सां.यो. प्रेमबाई कृते सां.यो. सुंदरवा, सुखपर।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग आदर्शपत्रिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

पहचान के बिना अधुरा

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान सात वर्ष वन विचरण किया। उन दिनो तीर्थयात्रा करते करते बुधेज आये। किसी का आमंत्रण नही था। फिर भी वहाँ वे पहुँच गये। उनकी शरीर पर मृग चर्म सुशोभित हो रहा था। तप के कारण शरीर क्षीण हो गया था। मांस, रक्त सभी सूख गये थे। केवल अस्थिपंजर अवशिष्ट दिखाई देते थे। प्रभु की उम्र उस समय १९ वर्ष की थी। उनके पास कुछ भी साधन सामग्री नही थी, इसीलिये तो उन्हें वर्णिराज कहा जाता है। उनके पास शालिग्राम भगवान थे। भगवान को भोग अर्पण करने की कोई व्यवस्था नहीं हो पायी - दोपहर हो गया। गाँव में जाकर पूछे कि यहाँ कही सदाव्रत चलता है ? यह सुनकर किसीने कहा कि सामने चले जाइये यहाँ पर खोड़ाभाई सदाव्रत चलाते है। इधर वर्णिराज भी खूब भूखे थे। ठाकुरजी का भोग भी नही लगा। प्रभु सीधे खोडा भाई के घर पहुंच गये। लेकिन घर में खोडाभाई नहीं थे। उनकी माताजी थी। उनके घर में सदा साधु-महात्मा आते रहते थे। आज भी रोज की तरह यह भी कोई साधु होगा ऐसा समझ कर विशेष ध्यान विना दिये वर्णिराज को बुलाकर कहीं कि झोली पसारो, उसमें अन्न डाल दूँ। अन्न में बाजरी वह भी कचरे से भरी हुई। देखते नहीं अच्छी लगती थी।

सौराष्ट्र में पहले के जमाने में ज्वार अधिक होती थी। उस ज्वार को जमीन में गढडा खोदकर भीतर रखते थे। ज्वार ऐसा अनाज है जो जल्दी बिगडता नही है। जमीन मे संग्रह कर के रखते कि भविष्य में कहीं दुष्काल पडे तो यह काम में आवे। जो ज्वार अधिक समय तक भीतर रही होगी उसमें शीत का असर होने से बिगडने की संभावना रहती है। उसमें दुर्गन्धआने लगती है। ऐसे ज्वार को माताजी ने वर्णिराज को देने के लिये बुलाती है। वे खड़े-खड़े विचार करते है कि वृद्धा माता मेरी बात मानेंगी ? कारण यह कि दूसरे को मनाना सरल है लेकिन मां जी को मनाना बहुत कठिन है। यह वृद्धा माताजी हमें पहचान सकेंगी या नहीं ? प्रभु कहते है कि सद्बुद्धि वाली माँ ? हमारे पास शालिग्राम हैं। भले हो उससे हमें क्या ? उसकी हमें कोई जरुरत नहीं। लो यह ज्वार और आगे बढो। पुनः प्रभु कहते है कि मां आप मेरी बात सुनो मेरे पास शालिग्राम भगवान हैं। शालिग्राम को नैवेद्य लगाना है। ज्वार लेकर हम क्या करेंगे। यदि आपके पास तैयार भोजन हो तो भोग लगाने के लिए दीजिये।नही, साधुं को घर में नही आने देना चाहिये। आपको ज्वार चाहिये तो लेजाओं अन्यथा रोटी इत्यादि कुछ नहीं मिलेगी।

स्वामिनारायण भगवाने कहा कि रोटी न हो तो कोई बात नहीं आंटा तो होगा ? थोड़ा भी आंटा हो तो उसे दीजिये उससे बाटी बनाकर शालिग्राम भगवान को अर्पित करुं। नहीं आंटा भी नहीं है। आंटा इत्यादि मांगना हो तो क्यों साधु होते हो ? एक तो बाबा दूसरे रोटी मांगते हो। आंटा मांगते हो। सभी को हम ज्वार ही देते हैं। माताजी बड़ी व्याख्या प्रारंभ कर दी। लेकिन एक चुटकी आंटा नही दी। तीसरी बार वर्णिराज ने कहा हम आपके घर आये है, थोडा आंटा तो दीजिये। आप हमारे जैसे बाबा को नही देखी होंगी। अरे ! आप अर्थात् कौन ? तुमसे बड़े लम्बे - चौंडे बाबा यहाँ आते रहते है। तूं तो दुबला पतला है। सभी यही ज्वार लेजाते है। तुमसे मैंने कह दिया कि ज्वार लेना है तो ले नही, तो आगे बढ। प्रभु को विचार हुआ कि यह वर्क पिघले ऐसा नहीं है। भगवान आये कल्याण करने के लिये, सुख देने के लिये। खोडाभाई कोई बहुत बड़े धनवान नहीं थे। फिर भी थोड़ा बहतु जो उनकी खेती में से निकलता उसी से सदाव्रत चलाते थे। यह एक पवित्र कार्य करते थे। भगवान को हुआ कि विना स्वार्थ के सदाव्रत चलाते हैं। पुण्य का काम करते हैं इसलिये उनका हम हित कर दें। ससृद्धि देने आये लेकिन माजी का स्वभाव कैसा ? मांजी भगवान को पहचान नहीं पांयी प्रभु विचार करते हैं। कि हम उन्हें देने आये थे विना दिये कैसे जांय। भगवान स्वामिनारायण ने ज्वार ले लिया। उसे लेकर वृक्ष के नीचे बैठकर उसमें से दो दाना लेकर मुख में डालकर चबा गये, बाद में अवशिष्ट ज्वार को उसी वृक्ष के नीचे कबूतरों को डाल दिया। कबूतर खूब प्रसन्न होकर खाने लगे। वह दृश्य

माताजी देखकर कहने लगी कि देखो यह बाबा ज्वार नहीं चाहता था । लिया और लेकर कबुतरों को डाल दिया । बाबा हो गया । फिर भी गांठ गयी नहीं । लेकिन बाबाओं की गांठ ऐसी ही होती है, जिसे देना चाहते है उसे अवश्य देते हैं । भगवान संकल्प करके आते हैं और देकर ही जाते हैं । ईश्वर प्रतीक्षा के लिये बैठते नहीं है । खोडा भाई के यहाँ मांजी भले रोटी नहीं दी, आंटा भी नही दी । पिर भी भगवानने जो संकल्प किया था वहीं किया, उनके ज्वार को लेकर दो दाना मुख में रखकर सुखी होने का वचन दे दिया ।

लक्ष्मीजी परमात्मा की शक्ति है । उनकी दासी है । भगवान संकल्प करते है कि यह भाई सुखी हो तो ही लक्ष्मीजी उसकी तरफ दृष्टि करती है । रिद्धि-सिद्धि सब उसके घर विद्यमान होजाती है । भगवान स्वामिनारायण वर्णि के रुप में भूखे थे और शालिग्राम को नैवेद्य भी अर्पण नही हुआ । वहाँ से वे चल दिये । गाँव के बाहर बहने कूंयें पानी भर रही थी । कूयें में से भरा घड़ा का पानी खींचती जाती और दूसरे घड़ों को भरती जाती । उसी समय वर्णिराज कूये के पास पहुंच गये । बहनों से कहे कि हमें भी पानी भरना है । आप लोग अभी मत भरिये, पानी का छींटा आता है । बहनों ने कहा कि मैं पानी देती हूं, लेलो, महाराज ने कहा कि आप के घड़े का पानी हम नहीं लेंगे । बहने खड़ी रही, वर्णिराज अपने हाथ को लंबा करके कूयें में से पानी निकाल लिये । शालिग्राम भगवान को अर्पण किये और स्वयं जलपान किये । बहने आपस में बात करने लगी कि कितना चमत्कारिक ब्रह्मचारी है ।

कितना मुख मंडल पर तेज है । बहुत छोटी उम्र है । इतनी छोटी उम्र में इस वेश को धारण कर लिया है । वह बाबा कैसा था, जब बहनों ने बताया कि इस तरह उसका स्वरुप है, पानी कूये में से हाथ लम्बाकर कमंडलु में भर लिया । मांजी ने कहा कि वह बाबा मेरे घर भी आया था । उसी समय खोड़ा भाई भी आगये । सभी वृत्तान्त सुनकर प्रभु के पीछे घोडी दौडाये लेकिन इतने में वे अलक्षित हो चुके थे ।

इसीलिये कहा है कि - बीता हुआ समय, छूटा हुआ बाण कुंभ में से निकला हुआ शब्द, गुमादी गयी तक पुनः मिलती नही । इसलिये सावधान होकर भगवान की भक्ति करनी चाहिये । भगवान बड़े दयालु है । वे आपके संकल्प को अवश्य पूर्ण करेंगे । यदि आप वेखबर रहेंगे तो परमात्मा आपके दरवाजे पर आकर चले जायेंगे । इसलिये सदा सावधान रहना चाहिये । भगवान की पहचान विना संसार में बहुत कुछ अधूरा है ।

●

भवान सदा रक्षा करते है

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवानने नव महामंदिरो का निर्माण करवाया । यह सर्वविदित है । उसमें विश्व का सर्व प्रथम मंदिर अमदावाद कालूपूर श्री स्वामिनारायण मंदिर जिस में श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठापित किया । उस समय से लेकर अंतिम मंदिर गढपुर में गोपीनाथजी की प्रतिष्ठा करवाये । मंदिर निर्माण के समय हुये चमत्कारो का दर्शन होता । महाराज स्वयं चमत्कारिक ढंग से सभी की सहायता करते ।

एक दिनकी बात है । गढपुर गोपीनाथजी के मंदिर का काम चल रहा था । उस में एक बड़े पत्थर को रस्सी में बांधकर ऊपर चढाया जा रहा था । उस रस्सी में दो धागे टूट चुके थे, यदि उसे ऊपर खींचा जाय तो रस्सी टूट जाय और पत्थर नीचे गिरे । बहुत सारे लोगों के घायल होने की संभावना थी । सभी संत गृहस्थ सेवक इस दृश्य को देख रहे थे । उसी समय निष्कुलानंद स्वामी ने कहा, महापुरुषो । क्या देख रहे है, रस्सी को ऊपर खींचिये । भगवान की मरजी होगी तो पत्थर ऊपर जायेगा अन्यथा नीचे गिरेगा तो हम लोग सभी मरेंगे । लेकिन हम सभी की रक्षा करने वाला तो बगल में बैठा है । ऐसी भावना करते है पत्थर यथास्थान पहुंच गया । उस समय सभी को प्रत्यक्ष अनुभव हुआ कि महाराज रक्षा करते हैं ।

इसके बाद महाराज खडे होकर सभी कोडांटने लगे कि इस तरह खतरे का काम करते है । कुछ अभी हो जाता तो । भगवान तो रक्षा करंगे न । भवान कहा कहाँ रक्षा करेंगे । ऐसा कहकर अपने डुपट्टे को दिखाते हुए कहे कि देखीये मेरा यह डुपट्टा भींग गया है । इस पत्थर को ऊपर लेजाने के लिये हमें कितनी परेशानी उठानी पडती थी । उस पत्तर को हमने ही अपने हाथों से यथा स्थान बैठाया है । इसलिये अन विना विचारे कोई काम मत कीजियेगा ।

सज्जनो ! भगवान तो स्वतंत्र तथा सर्वत्र हैं । जिस तरह प्रहलाद की रक्षा किये, उसी तरह हमारी भी रक्षा करने के लिये सदा तत्पर रहते हैं । फिर भी विना विचारे कोई काम करेंगे तो निश्चित आपत्ति आ सकती है । इस उपरोक्त कथानक से भगवान स्वामिनारायण हम सभी को शिक्षा देते हैं ।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"हम दो दिन के मुसाफिर"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम इस पृथ्वी पर किस लिए आये हैं ? घूमने-फिरने के लिए, पानी पूरी खाने के लिये, मोज-मजा करने हेतु । इस हेतु भगवानने हम को यह मनुष्य शरीर दिया है । पृथ्वी पर भेजा है । ''नही'' आप लोग सभी मनाकर रहे है तो इस पृथ्वी पर समस्त जीव उस भगवान की रचना है । हमें सभी जीवों को साथ मिल-जुलकर एकता से रहना चाहिए । क्योंकि सभी का स्वभाव भिन्न-भिन्न होता है । हमें सामने वाले व्यक्ति के दुर्गुण तुरंत दिखाई देतें है । परिणाम स्वरुप राग द्वेष हो जाता है । हमारे घर यदि कोई दो दिन के अतिथि बनकर आता है तो हम उसका ख्याल रखते है । और यदि हम किसी के घर अतिथि बनकर जाते हैं तो हम भी उसकी मर्यादा रखते हैं । उसी प्रकार इस दुनिया में हम एक मुसाफिर बनकर आये है । और ऐशी भावना रखनी चाहिए कि जगत के मनुष्यों के साथ कुछ ही दिन रहना है । इसी लिए प्रत्येक के साथ संयमी बनकर संयमी जीवन ही पर्याय भक्ति है । सदैव परोपकार की भावना रखनी चाहिए दूसरों के दुःख से दुःखी और सुख में सुखी होना चाहिए । क्योंकि मनुष्य के जीवन में ४० वर्ष तक जोडता घटाता है २५ वर्ष तक अभ्यास करने पर ज्ञान की वृद्धि होती है । बाद में धन कमाने पर धन प्राप्ति होने पर विवाह होता है । उसके बाद संपत्ति की वृद्धि होती है ।उसके बाद संतानो के विवाह होने पर बहु उनकी संतान की प्राप्ति होती है । इसी प्रकार का घटाना-जोडना-बढाना आजीवन ५० से ६० साल तक का घटनाक्रम होता है । संपत्ति मा बटवारा हो संतान अलग हो जाये उसे घटाना कहते हैं । और ६० साल के बाद वृद्धावस्था में स्वार्थ के संबंधतूट जाते हैं । इसीलिए मनुष्य अकेला हो जाता है । मनुष्य को आगामी जीवन में काफी पीडा होती है । मस्तिष्क भी साथ नही देता । भक्ति में भी रस नही पड़ता । इसी लिए अंत समय में परमात्मा की याद नहीं आती ।

उसका उपाय क्या है ? तो प्रथम से ही सबकुछ सही रखना चाहिए । उसके लिए दूसरों को अधिक से अधिक सुख देने का प्रयास करना जाहिए । जीवन से स्वार्थ को दूर करना चाहिए । अपना स्वार्थ छोडकर दूसरों का हित करना चाहिए । आध्यात्मिक धर्म-भजन भक्ति का बचपन से ही साक्षात्कार करना चाहिए । जिससे वृद्धावस्था में मनुष्य यदि अकेला भी हो जाये तो उसका मन भगवान में लगा रहेगा । परिणाम स्वरुप उसका अंतिम समय भी सुधर जायेगा । जिंदगी में से अहम् की शून्यता का अर्थ है कि मनुष्य दूसरों के साथ नम्रता पूर्वक वरतन करे । हमें शुरुआत से ही ऐसी भावना रखनी चाहिए कि हमे मात्र कुछ ही दिन इस दुनिया में रहना है । जीवन में सुख या दुःख का समय कायमी नहीं होता है ।

एक राजा था । उसकेभी पास एक महात्मा आता है । राजा धार्मिक होता है । इसीलिए महात्मा का स्वागत करता है । महात्मा राजा को वार्षिक आशीर्वाद स्वरुप प्रदान करते है । और कहा कि जब दुःख हो तो एक नंबर की सूचना पढ़ना और जब सुख हो तो दूसरे नंबर की सूचना पढ़ना । जब दुःख आता तो एक नंबर की सूचना पढते हैं जिस में लिखा था कि ''यह समय भी व्यतीत हो जायेगा'' और उसमें थोडी सी हिम्मत आती है । और समय व्यतीत हो जाता है । राजा को जीत हासिल होने पर राजगद्दी वापस मिल जाती है और सुख के समय भी सूचना पढ़ता है उस में भी वही लिखा होता है कि यह समय भी व्यतीत हो जायेगा । राजा को समझ में आ जाता है कि सुखया दुःख की स्थिति स्थायी नही होती इसीलिए मनुष्य को विषम या सम परिस्थिति में समभाव से ही रहना चाहिए सुख या दुःख को भगवान का प्रसाद मानना चाहिए । इस के बावजूद भी मन ना लगे तो मेरे जीवन में ऐसा दुःख क्यों आया ऐसा भगवान के पास बैठकर पढना चाहिए । क्योंकि सुख या दुःख दोनो ही भगवान का दिया हुआ है । इस में मेरा कुछ भी नहीं है । मैने इस में कुछ खोया नहीं है । ऐसी प्रार्थ;ा करके संतोष करना

चाहिए।

•

निष्काम व्रत पालन

- सांख्ययोगी कोकिलाबहन (सुरेन्द्रनगर)

आद्य शंकराचार्य महाराजने कहा है कि ''इस दुनिया में सबसे उत्तम आभूषण चारित्र्य है'' चारित्र्य ही मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ पूजी है। चारित्र्य के बिना जीवन सुगंधित नही हो सकता। जिसका चारित्र्य कमजोर है वह निर्मल पौधे के समान है। सामान्य हवा से झुक कर वह समाप्त हो जाता है। किसी भी धर्म संप्रदाय की नीव चारित्र्य पर आधारित होगी तो ही वह धर्म संप्रदाय टिक सकता है। अन्यथा वह काल के मुख में इतिहास की एक घटना बन जाता है। किसी भी व्यक्ति, परिवार, संस्था, धर्म-संप्रदायो में निष्काम व्रत पालन ही अनिवार्य है। ''जर, जमीन तथा जोरु ए त्रणेय कजीयानां छोरुं'' ऐसी कहावत है।

चारित्र्य संरक्षण के लिए निष्काम व्रत पालन अति आवश्यक है। निष्काम व्रत पालन का अर्थ काम-वासना, विकार तथा मायिक इच्छा । और निष्काम का अर्थ है मायिक ईच्छाओं का त्याग करना, वासना का त्याग करना इन सभी को पालन ही निष्काम व्रत पालन है।

अन्य धर्मसंप्रदायो की तुलना में श्री स्वामिनारायण भगवान ने निष्काम व्रत पालन का आग्रह किया है। उसका पालन करवाया है। धर्मकुल संभालने से पहले ही निष्काम व्रत के आग्रही श्री नीलकंठ वर्णीने प्रथण से ही लोज की आश्रम की दिवाल में पडोस में से अग्नि लाने वाले छिद्र को बंद करवाया तथा त्यागी के स्थान में स्त्रिओं का मार्ग निषेधकरवाया । ''निष्काम व्रत पालन'' के महत्व को प्रस्थापित करवाया। स्त्री पुरुषों की सभा अलग करवाई। श्रीहरिने सभी को समझाया कि ''सामान्य रुप से बुद्धि भ्रष्ट होने हेतु स्त्री पुरुष एक दूसरे के लिए जिम्मेदार है। घी तथा अग्नि का संबंधहोने पर ज्वाला प्रज्जवलित होती है। उसी प्रकार पुरुष का संबंधभी कामाग्नि बनर दोनो को जला देता है। अर्थात् धर्म से चलित करता है।

श्री स्वामिनारायण भगवानने भाइयों तथा बहनों के लिए अलग मंदिरो के निर्माण की आज्ञा की है। उन सभी मंदिरो में बच्चों के लिए दर्शन करने की अलग व्यवस्था होती है। मंदिरो में दर्शन करने हेतु, आने-जाने हेतु भाईओं तथा बहनों के मार्ग अलग-अलग है। भक्ति करते समय या ज्ञान का रसपान करते समय सभा मंडपो में भाई-बहन परस्पर संसर्ग में आकर्षित होकर मनोविकार का भोग न बने इस हेतु से श्रीहरिने भाईओ-बहनों की अलग सभा करने की व्यवसथा की जाती है। इससे निष्काम व्रत का भंग न हो । निष्काम व्रत पालन व्यवस्था विरुद्ध वर्तन करनेवाली बालबाई तथा हरबाई नाम की दो महिलाओ को श्रीहरिने अपनी उपस्थिति में ही सत्संग से विमुख करके निष्काम व्रत पालन में अपना दृढ आग्रह निश्चित किया था। श्रीहरिने ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने की आज्ञा की है। साधु-पुरुषो तथा त्यागी महिलाओ को भी एक-दूसरे के साथ में प्रवेश प्रतिबंधकरके श्रीहरिने निष्काम व्रत पालन के विष यमें अपनी दृढ़ता घोषित की थी।

श्रीहरिने शिक्षापत्री में आज्ञा कि है कि अपनी माता, बहन तथा पुत्री के साथ एकांत में नही रहना चाहिए । कितनी सूक्ष्म दृष्टिकोण के साथ श्रीहरिने निष्काम व्रत पालन के हेतु दृढता रखने का अनुरोधकिया है। निष्काम व्रत पालन करने हेतु श्रीहरि ने कहा है कि स्त्री-पुरुष चाहे कितने ही भगवद् पारायण भक्त हो तो भी उनका विशेष महत्व नहीं करना चाहिए एकदूसरे का महत्व समझने पर एक दूसरे का चिंतन मनन होता है । तथा वह स्वप्न में दिखाई देने लगता है। अत: अंतमें धर्मभ्रष्ट हो जाते हैं।

स्वामी विवेकानंदजी कहते है कि ''चारित्र्य से बुद्धि आती है। परंतु बुद्धि से चारित्र्य नहीं प्राप्त होती। इस चारित्र्य को संग्रहित करने का यथार्थ मार्ग निष्काम व्रत पालन है। चारित्र्य में एक छोटा सा भी धब्बा लग जाने पर मनुष्य की वर्षो की साधना से प्राप्त कीर्ति का नाश हो जाता है । शीलता बिना बुद्धि अधोगति मार्ग पर हो जाती है। चारित्र्य का विकास होना तो व्यक्ति की प्रतिमा का विकास होगा। धर्म ज्ञान, वैराग्य-भक्ति की प्राप्ति के हेतु उत्तरोत्तर प्रगति करनी होतो निष्काम व्रत का पालन करना ही एक मात्र विकल्प है।

आज के समय में घर-घर टी.वी. में दृश्यों क देखने और सुनने के कारण युवान स्त्री-पुरुष समाज की अधोगति हो रही है। समय स्थित आज नाजुक है। चारों

तरफ वासना का साम्राज्य है। आज भी नयी पीढी टी.वी. के दृश्यो को देखकर सुनकर इसका अनुकरण करती रही हैं। युवान स्त्री पुरष विकारी दृष्य तथा बिकारी शब्दों को सुनकर लाज-मर्यादा भूल गये । वेश-भूषा अमर्यादित होने के कारण अनेक प्रकार के दुःखो को प्राप्त करते है। बुर्जुगो के साथ बात करने का विवेक नष्ट होते जा रहा है। पश्चिम देश की संस्कृति के आगमन ना होने दुष्कर्म होने लगे है । निष्काम प्रत का पालन ऐसी स्थीति में अति आवश्यक है।

निष्काम वर्तमान श्रीजी महाराज को कितना प्रिय है उसका उल्लेख महाराजने गढडा मध्य के ३३ वें वचनामृत में किया है, ''जिसका निष्कामी वर्तमान दृढ है उससे हजारों मिलों की दूरी होने पर भी हम उसके समीप ही है, और जिसके निष्काम कर्म में त्रुटि हो वह हमारे पास होकर भी लाखों मिल दूर है। और हमें जो निष्कामी भक्त है उसी की सेवा अधिक प्रिय है। किसी भी स्त्री या पुरुष की दृष्टि में आनेवाला फर्क हमारी ज्ञान में आये बिना रह ही नही सकता । हमारी उस मनुष्य पर अतिशय अप्रसन्नता रहती है । इसीलिए निष्कामी वर्तमान में रहनेवाला ही हमे प्रिय है।

वासुदेवानंद ब्रह्माचरी श्वेत वस्त्र धारण करते थे। रंगीन वस्त्र देखने पर भी वे उपवास करते थे। एक समय वे ग्रंथ की रचना कर रहे थे। उस वक्त उनकी नजर बाहर खिड़की पर गयी। एक मकान में किसी रंगीन वस्त्र पहने हुए पर दृष्टि पड गयी। उन्हों ने कहा आज स्त्री का रंगीन वस्त्र दिखाई दिया है इस कारण में उपवास करुंगा । किसी सेवक ने जांच की तो मालूम पडा कि कोई स्त्री नहीं थी मोर था। इस बात को जानने के बावजूद भी उन्हें चिंतन तो हुआ था ? ईसीलिए उन्हों उपवास करके प्रायश्चित किया। इसीलिए निष्काम व्रत का पालन अवश्य करना चाहिए।

●

भगवान की चौभर की महिमा

– रमीलाबहन के. मोदी (हिंमतनगर)

स.गु. प्रेमांद स्वामी रचित ''ओरा आवो'' के छट्ठे पद में महाराज के अंगो का सुंदर वर्णन किया गया है।

म्युजियम में प्रसादी के वस्तुओं को देखकर हृदय में शांतिका अनुभव होता है। भगवान के एक-एक अंगो के प्रताप को वराह भगवान के दृष्टांत से समझा जा सकता है।

नंद नामक राजा थे। उहें द्रव्य की ऐसी लालच हुई कि धन मेरे पास ही रहना चाहिए प्रजा के पास नहीं। वैसे तो राजा के पास ही होता है। प्रजा को दो समय का भोजन मिले वही बहतु बड़ी बात है। उन्होंने अपने राज्य में भिन्न-भिन्न प्रसाद की वसूली प्रारंभ करदी। प्रजा कर-महसूल भर-भर कर गरीब बन गयी। प्रजा से प्राप्त धन उसने गुप्त रुप से समुद्र में छिपा दिया। कोई महात्मा नंद राजा के यहाँ आये थे। उन्हें ने नंदराजा के स्वागत से प्रसन्न होकर वराह भगवान की चौभर प्रदान की थी। उसी चौभर की सहायता से नंदराजा समुद्र में जा सकता था। समुद्र का पानी उसे छू भी नही सकता था । समुद्र में उसे रास्ता मिलजात था । उसके बाद प्रजा का धन लूंट कर समुद्र में जमा करने लगा । एक दिन राजा को विचार आया कि अभी भी प्रजा के पास पैसा तो होगा ही । उसने ४० ऊँट सजाकर प्रजा के बीच में बेचने के लिए रखे। और एक ऊँट की किंमत एक पैसा रखी। ४९ ऊँट वापस आ गये। मात्र एक ऊँट किसीने खरीदा और वह एक पैसा उसे किसी कब्र के पास से मिला। तो राजाने आदेश दिया कि राज्य की सभी कब्र खोद ली जाये और पैसा नीकाला जाय। प्रभुने नारद को बुलाकर कहा कि नारद इसे रोको यह अपनी मर्यादा की हद से कहीं आगे बढ़ गया है। इसे रोको।

नारदजी नंदराजा की अनुपस्थिति में महल में आकर महारानी से मिले और रानी से कहे कि नंदराजा की आप से पहले भी एक रानी थी और जिस प्रकार वे उसे प्रेम करते थे वैसा प्रेम वे आपसे नही करते। और प्रथम रानी का छाया चित्र पूजा घर में रखते है राजा। यदि मेरी बातो का विश्वास नहीं है तो स्वयं जाकर देख लीजिए। नारदजी चले गये। रानीने पूजा का डिब्बा खोलकर देखा तो छोटी सी हड्डी देखकर वे क्रोधित हो गयी । वास्तव में तो वह वराह भगवान की चौभर थी । नारदजी के उकसाने से पवित्र चौभरको पुरानी रानी की अस्थि समझ कर उसे अग्नि में जलाकर राख कर दिया। नदंराजा को इस बात का ज्ञान नहीं था। वे नित्य क्रम अनुसार सोने की डिब्बी को साथ रखकर समुद्र में पाने को नीकले। परंतु समुद्रने मार्ग नहीं दिया। राजाने देखा तो सोने के पात्र में वह चौभर नहीं थी।

महल में आकर रानी से पूछने पर ज्ञात हुआ की चौभर तो जलकर नष्ट हो गयी है । नंदराजा को आघात लगा और तुरंत मृत्यु हो गयी । असीम धन समुद्र में ही दफन हो गया । निष्कुलानंद स्वामी कहते है कि,

सारंगपुर के पास बोटाद गांव में स्वामिनारायण भगवान एक बाजार के बीच में से नीकले । साथ में कुछ संत भक्तगण थे । एक आदमी रास्ते के बीच में बैठकर टोकरी मे रेती-कंकर जोख रहा था । और चिल्ला रहा था । लेजाइए इस बार चीनी बहुत सस्ती है । ताजा है । यह सब देखकर स्वामिनारायण भगवानने वहाँ के भक्तों से पूछा यह आदमी कौन है । भक्तोंने जवाब दिया कि बहुत बड़ा व्यापारी था । परंतु व्यापार में नुकशान होने से पागल हो गया है । इसीलिए रोज अपनी दुकान खोलकर वैठता है और इसी प्रकार रेती कंकर जोखता है । भगवानने कहा जो मनुष्य भगवान की भक्ति नहीं करता वे सभी उनके लिए रेती-कंकर के व्यापारी है । उनके लिए वे सब पागल है । इस दुनिया में आकर जिस ने आत्म चिंतन नही किया वे सभी मूर्ख है । आत्महित का चिंतन करने वाला ही बुद्धिशाली है । आत्मा का माया आवरण नहीं है । और जो परमात्मा नारायण में कोई प्रकार का दोष नही दैखता है उसका आत्मचिंतन उत्तम है ।

●

संत की सोहत

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

''सच्चा संत की सरिगयां, कैक जीवोना काज,
एवां संतने सेववा, अवसर आवियो छे आज ।
जो मनाय तो मने मानजो छे अति अर्धनी वास,
निष्कुलानंद नक्की कहे, सुख थवानी ए साक्षात् ।''

सच्चे संत की संगत हमारे भीतर के का, क्रोधातीत होने से तथा भावना से मुक्ति प्रदान करवाती है ।

खंभात में श्रीजी समकालीन सदाशिवभाई नामक उच्च कोटि के हरिभक्त थे । श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा थी उन पर सम्पन्न परिवार के थे । समाज में धनाढ्य शेठ के रुप में मान था । रहने के लिए वे शानदार कोठी तैयार करवा रहे थे । धन की भी कमी नहीं थी । पुरा दिन दिमाग में हेवली का ही ख्याल रहता था । कई दिनो बाद हवेली तैयार होने पर हवेली भगवान संतो का वास करवाने हेतु वे सद्. श्री गोपालानंद स्वामी को आमंत्रित करने गये । स्वामी के समीप उन्होने हवेली की अत्यंत प्रशंसा की । गोपालानंद स्वामी शेठ की हवेली से जुड़ी वासना समझ गये । उन्होंने कहा सदाशिवभाई अभी आ पाना जरा मुश्किल है । कुछ समय आप वही रहीए । बाद में हम साथ ही खंभात जाये । आप की इच्छा अनुसार बड़ा उत्सव करके हवेली में भगवान को स्थापित करेंगे ।

गुरुवर्य की आज्ञा से सदाशिवभाई मना नहीं पाये । और रुक गये । सद्. श्री गोपालानंद स्वामी ने सदाशिवभाई को सांख्य के पाठ का अध्ययन करवाना शुरु किया । समर्थ गुरुदेव की अमृतवाणी द्वारा ज्ञान का उजाला उनमे व्याप्त होने लगा । अंतर में हवेली के सर्वसुख दाता श्रीहरि बिराजमान हो गये । ऐसे समय में एक पत्र आया कि सेठ की हवेली जलकर खाख हो गयी उस पत्र को लेकर सद्गुरु ने अपने आसन के नीचे रख दिया और कहा, भक्त राज आप की हवेली भस्म हो जाये तो कोई आपति आपको । सदाशिवभाईने हाथ जोड़कर कहा कि, कृपालु गुरुदेव मूर्ति कोई परेशानी नही है । क्योंकि आपके योग सांख्यज्ञान ने सकुछ दिया है । सद्गुरुने आसन से त्र नीकालकर पढ़ा । उसे पढ़कर सदाशिवभाई ने निर्लेपभाव से कृतज्ञता पूर्वक कहा है । गुरुदेव ! आपके ज्ञानाग्नि में हवेली भस् कर दी है । यदि में वहाँ होता और हवेली भस्म होने के समाचार मिलते तो उसी अग्नि में मैं भी जलकर मर जाता । आपश्रीने मुझे यहाँ रोककर समागम का लाभ प्रदान कर कृतार्थ किया है ।

इस प्रकार सद्. श्री गोपालानंद स्वामी का समागम करने से सदाशिवभाई को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ । इसीलिए बड़े गुरु का संत-पुस्तको का साहचर्य मिले तो अवश्य कर लेना चाहिए । इसीलिए कहा गया है कि,

''लाखो मां लाधे नहि, अजे करोगे मां होय कोक,
एवा को मली जाय, तो करी लेवो जोग ।''

सच्चे संतो के दर्शन स्पर्श करने से, उनकी सेवा करने से जीव का परम कल्याण होता है । सर्वे सुख के स्वामी श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रगट प्राप्ति होती है ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में दिवाली पर उत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणकमल में तथा समग्र धर्मकुल के सानिध्य में दीवाली पर भव्यता से उत्सव मनाये गये।

काली चर्तुदशी : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बिराजमान तथा सभी भक्तों का रक्षण करनेवाले श्री कष्टभंजन देव का अश्विन शुक्ल-१४ को पूजन विधिकिया गया। इस प्रसंग पर पुजारी पार्षद बाबु भगत तथा महादेव भगत द्वारा सुंदर अन्नकूट के दर्शन करवाये गये।

दिवाली : आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या को दिवाली के दिन पर प्रसादी के भव्य ऐतिहासिक सभा मंडप में प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी शाम को ६-०० बजे से ८-०० बजे तक समूह शारदा पूजन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से धूमधाम से सम्पन्न हुआ। आज के कम्प्यूटर के युग में भी हजारों धर्मप्रेमी भक्तोंने शरदा पूजन में लाभ लेकर अपने व्यापार में नितिमता शुद्धता को बनाये रखने के लिये था शिक्षापत्री के नियमों का पालन करने की प्रार्थना की।

नूतन वर्ष : कार्तिक शुक्लपक्ष-१ सं. २०७० नूतन वर्ष को प्रातः ५-०० बजे परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प.पू. बड़े महाराजश्रीने की। प्रातः ६-३० बजे शिंगार आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने तथा प.पू. बड़े महाराजश्रीने की। सभा में प.पू. ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर के दोपहर १२-०० बजे श्रीहरि के ६ठ्ठे, ७वें तथा ८ वें वंशज के द्वारा छप्पन भोग आरती की गयी। हजारों हरिभक्तोंने भक्तों ने दर्शन का लाभ लिया।

समग्र प्रसंग में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन से ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, नटु स्वामी, राम स्वामी आदि संत पार्षद मंडलने सेवा की। गाँव गाँव भर में प्रसाद वितरण में संतोने सुंदर सेवा की।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) बालासिनोर खात मुहूर्त

बालासिनोर में श्रीरि समकालिन महान संत स.गु. श्री महानुभावानंद स्वामीने (भाईओं का) मंदिर निर्माण हेतु ता. ९-११-१३ को प.पू.ध.दु. आचार्य महारजश्री के वरद् हाथों से खात विधिकी गयी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इस मंदिर निर्माण के आयोजन स.गु. महंत पू. शा.स्साव .आत्मप्रकाशदासजी तता पू. शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) के मार्गदर्शन अनुसार कार्य का शुभारंभ किया गया। प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामीने कहा कि सर्वावतारी का कार्य सर्वोपरि ही होता है।

खात मुहुर्त के यजमान श्री धीरजलाल चुनीलाल काछीया, सहयजमान गोविंदभाई बाड़ीलाल काछीया तथा ट्रस्टीओने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने नूतन वर्ष में सभी को परिवार में एकता, स्नेह, संस्कार तथा परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की आज्ञा में रहने की आज्ञा के साथ आशीर्वाद दिये। (कोठारीश्री, बालासिनोर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर तृतीय वार्षिक पाटोत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर का तृतीय वार्षिक पाटोत्सव एवं शाकोत्सव ता. २१-१-२०१३ को प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों सम्पन्न हुआ। हरिभक्तोंने प्रसाद ग्रडण करके उत्सव मनाया था। समग्र आयोजन पू. स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा पू. सगु. शा.छोटे पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारायणघाट) तथा संत मंडल द्वारा हुआ था। जिस में अ.नि. पटेल फकीरभाई त्रिकमभाई तथा अ.नि. पटेल आदरभाई मोतीभाई के परिवारने यजान पद का लाभ लिया था। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा (अंजली चार रस्ता अहमदाबाद)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ता. ७-११-२०१३ को प.भ. राजेशकुमार ललीतकुमार ठक्करने चि. मेहुल के लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद प्रदान करने हेतु पधारे थे। वासण श्री स्वामिनारायण मंदिर में दर्श; हेतु पधारे तथा श्री घनश्याम महाराज तता श्रीनरनारायणदेव की आरती करके सभा मं बिराजे थे। सत्संग भू,ण स्वामी तथा हरिभ्कतोने प.पू.ध.धु. आचार्य महारजश्री की आरती करके पुष्पहार से स्वागत किया था। अंत में पू. महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिया तथा प.भ. अरविंदबाई ठक्करने आभार विधिकी। वहाँ से प.भ. श्री राजुभाई के घर पधरामणी की।

(अरविंदभाई ठक्कर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा में ता. १३-११-१३ को देवदिवाली की एकादशी पर भव्य तुलसी विवाह सभी हरिभक्तोंने मिलकर धूमधाम से मनाया था।

(के.बी. प्रजापति)

थलतेज विस्तार में नूतन घर मंदिर

अहमदाबाद के थलतेज विस्तार में अनेक हरिभक्तगण वास करते हैं। जिनको नित्य दर्शन का सुख प्राप्त हो इस हेतु से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारायणघाट) के मार्गदर्शन से प.भ. कांतिभाई नारणबाई पटेल (राम) के निवास स्थान २, शांग्रिला बंगलो, हेबपुर चार रस्ता, शेल पेट्रोल पंप के पास १०० फिट रोड, थलतेज, अहमदाबाद में ता. १३-११-१३ के शुभदिवस पर नूतन घर मंदिर को खुला रखा था। इस प्रसंग पर संतो-हरिभक्तों द्वारा कथा वार्ता कीर्तन भक्ति के बाद समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने दिव्य आशीर्वाद दिये और कहा कि, आप सभी अब नित्य भगवान के दर्शन का सुख लिजिए।

(धनवंतभाई पटेल)

वावोल गाँव में "श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण" का आयोजन

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी के गाँव वावोल (तरपोज) में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की सम्पूर्ण प्रसन्नता से तथा वडनगर मंदिर के महंत शा.स्वा. नारायणव्ललभदासजी की प्रेरणा स्वरुप मार्गदर्शन से तथा सां.यो. पू. सुरजबाई तथा सां.यो. झवेरबाई की शुभाशीर्वस ता. ६-११-१३ से ता. १०-११-१३ तक ''मंदिर मंडल वावोल'' की तरफ से ''श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाहन पारायण'' का सर्वजीव हितावह के लिए मंगलमय आयोजन किया गया। पारायण के वस्तापद पर काकंरिया मंदिर के नवयुवान संत शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी गुरु महंत शा.स्वा. गुरुप्रकाशदासजीने व्यासासन पर बिराजमान होकर संगीतमय कथामृत का पान करवाकर भक्ति का रसपान करवाया। इस प्रसंग पर भव्य पोथीयात्रा द्वारा कथापारयण का उद्धोष किया गया। प्रथम दिन वडनगर मंदिर के महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा काकंरिया मंदरि के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा वडनगर मंदिर के कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने प्रेरक प्रवचन करके कथा का प्रारंभ करवाया गया।

इस प्रसंग को ता. ८-११-१३ को प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्रीने पधारकर पू. सां.यो. सूरजबाई तथा पू. सां.यो. झवेरबाई की तथा महिला मंडल की बहनोने श्रद्धा भक्ति की प्रसंसा कर सुभाशीष दिये।

ता. १०-११-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रपसादजी महाराजश्री की भव्य शोभायात्रा का दर्शन करके संतो-हरिभक्तोंने धन्यता का अनुभव किया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने कथा की पूर्णाहुति अपने शुभ वरद् हाथों से की गयी। वावोल के छोटे-बड़े तमाम हरिभक्तोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन तथा आरती करके शुभाशीर्वाद प्राप्त किये। अहमदादा मंदिर के विद्वान महंत स.गु.शा. स्वामी हरिकृषणदासजी तथा शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी ने प्रेरक प्रवचन किये। सभा संचालन विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर) ने किया। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल वावोल को युवानोने सफल सेवा की।

(शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददास, वडनगर)

सोला घाटलोडिया में सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण सत्संग मंडली (सोला-चांदलोडिया के विस्तार) से गणेशपार्क कोम्पलेक्ष विभाग-१ गोकुल डेरी के पास आर.सी. टेकनिकल रोड, सोला में देवदिवाली के दिन भव्य अन्नकूट दर्शन तथा सत्संग सभा आयोजित हुई थी। जिस में प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे। अन्नकूट की आरती उतारकर श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाकर आशीर्वचन दिये थए। नारायणघाट मंदिर के महंत शा.पी.पी. स्वामी (छोटे) चैतन्य स्वामी, माधव स्वामी ने कथा प्रवचन का लाब दिया था।

उपरोक्त स्थळ पर प्रति रविवार को तथा एकादशी को सत्संग का आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिये नमजीक के सभी हरिभक्त इस फोन पर संपर्क करे : ९५८६४२२६०१

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में तुलसी विवाह

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से, प.पू बड़े महाराजश्री की आज्ञा से, महंत स्वामी के दादा गुरु की प्रेरणा से तथा शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी, महंत शा.स्वा. हरिॐ स्वामी की प्रेरणा से कार्तिक शुक्लपक्ष १५ देवदिवाली को भव्य तुलसी विवाह मनाया गया।

जिस में वरपक्ष में सेवाभावी यजमान प.भ. श्री घनश्यामभाई शकराभाई पटेल (उवारसदवाले) के घर से दोपहर ३-०० वजे भगवान की शोभायात्रा धूमधामपूर्वक निकाली गयी। जिस में भजन-धून-कीर्तन करते हुए नारणपुरा मंदिर में लोग पहुंचे। जिस में भगवान तथा संतगण सुंदर बगीचे में बिराजमान थे। कन्या पक्ष के यजमानश्री जीतेनभाई व्रजलाल वधासीया परिवार तथा कन्यापक्ष के मामाश्री भोलाभाई जोईताराम पटेल (राजपुर) वरपक्ष के यजमान श्री भोलाभाई जोईताराम पटेल (ईटादरावाले) आदि परिवारने भाग लिया। सुंदर लग्नमंडप में भगवान को बिराजमान करके विवाह के दर्शन का सुख सभीने दिया।

शाम ६-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। संतो हरिभक्तो ने उनका धूमधाम से स्वागत किया।

इस प्रसंग पर आयोजित प्रासंगिक सभा में स.गु.स्वा. जगतप्रकाशदास, विवेक स्वामी (नाथद्वारा) ने अमृतवाणी का लाब दिया। महंत स्वामीने नारणपुरा मंदिर जीर्णोध्धार की, सुवर्ण सिंहासन आदि कार्यो की जानकारी सभा मे दी। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव प्रति निष्ठा रखने की बात कही। प.भ. घनश्यामभाई नटुभाई (काउ) (करजीसणवाले) आदि हरिभक्तोने सुंदर सेवा की।

सभा संचालन स्वामी प्रेमस्वरुपदासने किया। रसोई विभाग में मुकुंद स्वामी, देव स्वामी तथा मुक्तस्वरुप स्वामीने सुंदर सेवा की। (विशाल भगत नारणपुरा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (ता. लींबडी) मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. ९-११-१३ को श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल पुनः प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से सम्पन्न हुई। इस प्रसंग पर प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री पधारे थे। उस समय भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गाय।सके बाद मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा तथा यज्ञ की पूर्णाहुति विधिपूर्वक का पूजन आरती करके आशीर्वाद लिए। अहमदाबाद तथा मूली मंदरि के संतोने प्रासंगिक प्रेरक प्रवचन किया। यहाँ के क्षेत्रिय युवानों ने प.पू. महाराजश्री समक्ष व्यसन छोडने की प्रतिज्ञा की। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्रीने सभा को आशीर्वाद दिये। आयोजन लींबडी के महंत साधु भक्तवतत्सलासजीने किया था। सोनी नरेन्द्रभाई आदि हरिभक्तोंने सेवा प्रदान कि।

(कोठारी वंदनप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत साधु भक्तवत्सलदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी में दिवाली पर ठाकुरजी का सुंदर अन्नकूट का भोग लगाया गया। प्रबोधिनी एकादशी को बहनोंने श्रीजी महाराज मंडल द्वारा तुलसी विवाह का उत्सव मनाया।

(शा. वंदनप्रकाशदास)

मोरबी गाँव में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मोरबी गाँव में ता. ८-

११-१३ से १२-११-१३ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण नीताबहन बचुभाई परिवार के यजमान पद पर हुई। साधु धर्मजीवनदास गुरु स्वा. भक्तिहरिदासजीने कथा की। इस प्रसंग पर महिला मंडल द्वारा महिला सत्संग सभा का आयोजन किया गया । जिस में सां. कमलाबाई (सुरेन्द्रनगर) की शिष्या सां. कोकिलाबाईने सर्वोपरि निष्ठा, आज्ञा के साथ श्री नरनारायणदेव धर्मकुल की महिमा की।

(दिनाबहन विठ्ठलापरा)

विदेश सत्संग समाचार

केनेडा में श्री नरनारायणदेव का चमत्कार

अमदावाद के प.भ. दिनेशभाई भगत जो श्री नरनारायणदेव के चुस्त अनुयायी है। वे अपने पुत्र के यहाँ केनेडा में थे। वे और उनके पुत्र रशेष भगत अमेरिका के विज्ञा के लिए इन्टरव्यु गये थे। उनके पुत्र समय व्यतीत करने के लिए लायब्रेरी में गये तब अचानक ही उनका जेकेट खो गया। उन्होंने अपने पिता से बात की तथा पुलिस में शिकायत भी की। दिनेशबाई भजगतने श्री नरनारायणदेव की मान्यता रखने को कहा। श्री नरनारायणदेव बहुत ही दयालु है। चोर पकड़ा गया और जेकेट मिल गया। श्री नरनारायणदेव ने इस प्रकार केनेडा में चमत्कार किया। (रशेष डी. भगत द्वारा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की तथा प.पू. लाजी महाराजश्री के आशीर्वाद से, पू. जे.पी. स्वामी, पू. शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी तथा पू. सांतिपर्काशदासजी की प्रेरणा से मंदिर में धामधूम से उत्सव मनाय गये।

दीपावली के दिन उत्सव मनाया गया। कालीचतुर्शी पर श्री हनुमानजी का पूजन आरती तथा मारुति यज्ञ किया गया। जिसके यमजान श्री हितेषबाई तता अ.सौ. विंदुबहन पटेल तथा सुंदरकांड का पाठ किया गया। जिसके यजमान नेनदास नारणभाई पटेल (जानुदादा) का परिवार था।

नूतन वर्ष को अलौकिक शिंगार करवाकर पू. स्वामीने भक्तों को प्रसन्न कर दिया था। दोपहर १२ से ४ छप्पन भोग अन्नकूट किया गया। जिस के दर्श; के लिए सबा मंडप भी छोटा लग रहा था। इतनी भीड थी दर्शन के लिए। अन्नकूट के यजमान प.भ. हितेशभाई तथा बिन्दीबहन पाटडीया का परिवार था । प्रासंगिक सभा में पू. जे.पी. स्वामी, शा. विश्वविहारीदासजी, तथा पू. शांति स्वामीने सभी को नूतन वलर्ष के शुभाशीष दीये। प.भ. प्रेसिडेन्ट श्री जगदीशभाई ने समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद समस्त सभा को सुनवाये।

१६ नवम्बर को तुलसी विवाह का सुंदर आयोजन हुआ। जिस में वरपक्ष के यजमान श्रीमती आकांक्षाबहन तथा श्री विवेकभाई ब्रह्मभट्ट तथा श्रीमती रुपाबहन, श्री वलभाई देसाई तथा कन्या पक्ष के यजमान श्रीमति नीराबहन, श्री मितुलभाई राव, श्रीमती शीतलबहन तथा श्री हेमलभाई राव आदि परिवार थे। लग्न प्रसंग की प्रत्येक विधिके भगवान के साथ दर्शन कर के सभी हरिभक्तों ने प्रसाद का आनंद लिया। समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा संतो हरिभक्तों के प्रयास से पर्ध सुंदर सत्संग प्रवृती की जाती ही।

(वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आटलान्टा (ज्यॉर्जीया) दीपोत्स मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लाजी महाराजश्री की आज्ञा - आशीर्वाद से आटलान्टा मंदिर में दीपोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

काली चतुर्दशी को महंत स्वामी सत्यस्वरुपदासजने सुंदर कांड करके हरिभक्तो को प्रसन्नक र दिया । श्री हनुमानजी का पूजन अर्चन करके आरती दिवाली को ठाकुरजी के सुदंर वस्त्रो के साथ दर्शन करवाये। शारदापूजन तथा लेपटोप का पूजन किया गया। नूतन वर्ष को मंदिर तथा ठाकुरजी के सिंहासन को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा हरिभक्तों द्वारा रंगबीरंगी रोशनी से सुंदर सजाया गया। नूतन वर्ष को ठाकुरजी को १६१ प्रकार की मीठाईओं को हरिभक्तों ने गर् से बनाकर सुंदर सजावट कीगयी सभा में श्री दक्षेशबाई पटेलने प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का नूतन वर्ष का आशीर्वादपत्र पढ कर सुनाया। हरिभक्त परिवारोने दर्शन का लाभ लेकर धन्य हो गये। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़ महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ सत्संग प्रवृति सुंदर कार्यरत है।

(प्रे. दक्षेशभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से काली चतुर्दशी ता. २-११-१३ को श्री हनुमानजी का पूजन-आरती प.ब. हरिशभाई गोविंदभाईप टेल के यजमान पद पर पूर्ण भी गयी । ता. ३-११-१३ दिवाली को शारदापूजन विधिपूर्वक किया गया । जिसका कई हरिभिक्तोंने लाभ लिया । नूतन वर्ष को ता. ४-११-१३ तको ठाकुरजी के दर्श; का लाभ सुबह ६ से शाम के ७-०० बडे तक हजारो हरिभक्तोंने लिया । प.भ. मावजीभाई टांक अन्नकूट के मुख्य यजमान थे । सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तता महंत स्वामी का नूतन वर्ष का आशीर्वाद पत्र पढा गया । प.पू. बड़े महाराजश्रीने फोन द्वार भाईओं को तथा प.पू. बड़ी गादीवालाश्रीने भी फोन द्वार बहनो को नूतन वर्ष के आशीर्वाद दिये । यहाँ के युवान युवतीओं ने मंदिर को रोशनी से सजाया था । तथा अन्नकूट का प्रसाद अपने घर से स्वच्छतापूर्वक बनाकर लाये थे । (किरण भावसार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन अमेरिका

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में नूतन वर्ष को भव्य अन्कूट का भोग लगाकर ठाकुरजी का दर्शन किया ।

ता. १४ नवम्बर से १६ नवम्बर तक तुलसी विवाह का उत्सव धूमधाम से मनाया गाय । जिस में रास, गरबा, सत्कार समारंभ तथा शोभायात्रा आदि प्रसंग मनाये गये । सत्संगी युवक युवतिओं की सेवा प्रेरणारुप थी । संतोने सभी को तुलसी विवाह का माहात्म्य समझाया था । (रमेशभाई पटेल)

आई.एस.एस.ओ. पियोरिया चेप्टर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा - आशीर्वाद से आई.एस.एस.ओ. पियोरीया में प्रत्येक रविवार को सत्संग सभा होती है । १३ अक्टूम्बर रविवार को सभा में प.पू. महाराजश्री का ४१ वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया । प्रत्येक रविवार ६-०० से ८-०० तक नियमित समा होती है । जिस में बच्चे, युवानो ने सभा का लाभ लेते है ।

(रमेश टी. पटेल)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

अमदाबाद : पुरमकृपालु श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के निष्ठावान हरिभक्त प.भ. श्री कांतिलाल जोईताराम पटेल (घनश्याम कंस्ट्रक्सन) ता ३१-१०-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरणक रते हुए अक्षरनिवासी हुए है । वे प्रतिदिन श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने आते हैं । पैर की बिमारी के कारण ध्वज दर्शन से प्रभु के दर्शन का सुख मानते थे । ऐसे देव, आचार्य तथा संतो के कृपापात्र हरिभक्त की श्री नरनारायणदेव देश में कमी हुई है । श्रीहरि उन्हें अपने धाम में सुखिया रखें ।

उनावा (बालवा) : प.भ. ललीताबहन जशुभाई पटेल ता. २७-१०-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है ।

डेडीयासण : प.भ. भीखाभाई दानुभाई मारी की पत्नी सुभद्राबहन ता. ८-१०-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है ।

वावोल : प.भ. ईश्वरभाई विठ्ठलभाई ता. ३-११-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुए है ।

वेडा-गोविंदपुरा : प.भ. लक्ष्मणजी ठाकोर के पिताजी प.भ. सोमाजी ठाकोर ता. ४-११-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।



(१) कोठा मंदिर में शोभायात्रा में दर्शन देते हुए (साथ में पू. महंत स्वामी) तथा मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में कथा करते हुए पू. पी.पी. स्वामी ।(२) बालासिनोर में मंदिर की खातविधि करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ पू. पी.पी. स्वामी ।(३) वासणा अहमदाबाद मंदिर में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ संतगण ।(४) मुबारकपुर मंदिर में तृतीय पाटोत्सव प्रसंग में शाकोत्सव करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ देव स्वामी । (५) कांकरिया मंदिर हनुमानजी महाराज के पाटोत्सव प्रसंग में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संत मंडल ।(६) कारोल (मूली) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(७) छपैया में प्रसादी के स्थानों की परिक्रमा करते हुए हरिभक्तगण ।(८) कपडवंज मंदिर (बहनों का) में मूर्ति प्रतिष्ठा करते तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (९) कोटेश्वर गुरुकुल में प.पू. गादीवालाश्री के सानिध्य में बहनों के सत्संग शिबिर का आयोजन ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-કાલુપુરમાં બિરાજતા શ્રી નરનારાયણદેવના જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા સુવર્ણ સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે





શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪ થી ૨૮ ડિસેમ્બર-૨૦૧૪

અધ્યક્ષશ્રી : પ.પૂ. ધ. ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદમહારાજ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

- ૨૫૧ ગામડે સત્સંગ સભાઓ
- ૧૫૧ મીનીટની ૨૫૧ ગામડે અખંડધૂન
- ૫૧ કરોડ "શ્રી સ્વામિનારાયણ" મહામંત્ર લેખન
- જનમંગલ - ૧,૨૫,૦૦૦૦૦, વચનામૃત - ૫૧૦૦, ભક્તચિંતામણી - ૫૧૦૦ પાઠ
- પદયાત્રા દ્વારા કાલુપુર શ્રી નરનારાયણદેવ દર્શન
- ૧૧૦૦૦ શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન સભ્યપદ ઝુંબેશ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

- ૧,૨૫,૦૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૨૧૦૦ બોટલ બ્લડ ડોનેશન તથા સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ (ગામડાઓના બાળમંડળના વિદ્યાર્થીઓને)
- વ્યસન મુક્તિ અભિયાન
- ૧૫૧ અપંગોને ટ્રાઇસિકલ વિતરણ

આયોજક : મહંત સ્વામી તથા સ્કીમ કમિટિ, શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - કાલુપુર - અમદાવાદ-૧